सम्मेलन के नये आजीवन सदस्यों का स्वागत

नाम : **गोपाल अग्रवाल**
कार्यालय का पता :
द्वारा–अग्रवाल एण्ड जी एशोसिएट्स
''चार्टर्ड एकाउंटेंट''
५०, वेस्टर्न स्ट्रीट, रूम नं. ३०१, कोल–१२
मोबाइल नं.–०९३३१०१६९५०

नाम : **संजय हरलालका**
कार्यालय का पता :
''सेवा संसार''
४२, पाथुरिया घाट स्ट्रीट, कोलकाता–७
मोबाइल नं.–०९८३००८३३१९

नाम : **राजकुमार गोयनका**
कार्यालय का पता :
श्री हनुमान कोर्जिंग उद्योग
१८/१, महर्षि देवेन्द्र रोड
६ तल्ला, रूम नं. ८४ कोलकाता–७
मोबाइल नं.–०९८३६०८००१८

नाम : **पंकज बंका**
कार्यालय का पता :
द्वारा–पोलियाड
६३/१ए, सरत बोस रोड, दूसरा तल्ला
कोलकाता–२५
मोबाइल नं.–०९८३००५७०६७

नाम : **श्रवण कुमार चिरीपाल**
कार्यालय का पता :
साउथर्न रोड कैरियर्स लिमिटेड
पी–९, न्यू सी.आई.टी. रोड
दूसरा तल्ला, कोलकाता–७३
मोबाइल नं.–०९४३३०२९७४५

नाम : **सुखदेव वर्मा**
कार्यालय का पता :
७, रविन्द्र सरणी, रूम नं.–२११
दूसरा तल्ला, कोलकाता–१
मोबाइल नं.–०९८३००२६१७७

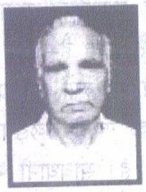

नाम : **काशी नाथ सराफ**
कार्यालय का पता :
शितल मल्लिक रोड,
टी, बिलासी
देवघर–८१४११७
मोबाइल नं.–०९८३५९९८२४५

नाम : **काशी प्रसाद चौधरी**
कार्यालय का पता :
चौधरी एण्ड कम्पनी
नटराज निकेतन–कास्टर टाउन
(बंगाली धर्मशाला के बगल में)
देवघर–८१४११२ (झारखण्ड)
मोबाइल नं.–०९३०८६८६९६१

सम्मेलन के नये विशिष्ट सदस्यों का स्वागत

नाम : **राजेश कुमार पोद्दार**
कार्यालय का पता :
एस.डी.इण्टरप्राइजेज, पी–८, न्यू सी.आई.टी. रोड, नियर लींग लैंग चाइनीज स्कूल,
प्रथम तल्ला, कोलकाता–७३
मोबाइल नं.–०९४३३०९५३४२

नाम : **महेश कुमार अग्रवाल**
कार्यालय का पता :
मेसर्स सन्मार्ग प्राइवेट लिमिटेड
१६०बी, चित्तरंजन एवेन्यू
कोलकाता–७०० ००७

नाम : **देवकीनन्दन खेतान**
कार्यालय का पता :
आयुश इण्टरप्राइजेज
६ए, बरडा ठाकुर लेन
कोलकाता–७०० ००७
मोबाइल नं.–०९८३१३९३१११

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe Now

BOOKS WISHLIST

Business Economics Subscription Form

Yes! I would like to subscribe **Business Economics**

Tick	Term	No. of Issues	News Stand Price	You Pay	You Save	Free Gift Value	Total Savings	USD	Tick your choice (s)
☐	3 Years	72	1080/-	900/-	180/-	650/-	830/-	70	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
☐	1 Year	24	360/-	325/-	35/-	250/-	285/-	25	☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐

Name : Mr./Ms. ____________________

Address : ____________________

____________________ City/District : ____________________

State : ____________________ Country : ____________________ Pin Code : ☐☐☐☐☐☐

E-mail : ____________________ Mobile : ____________________ Landline : ____________________ STD CODE

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. ____________________ dated: __________ for Rs. __________ drawn on: ____________________

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

Signature: ____________________ Date: __________

Mail your Cheque / DD to : Mr. Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact :
Kolkata : Ms. Sumita Agarwal : 033 2223-0368 • **Mumbai :** Rajendra Singh : 93208 73700
Chennai : Mr. P. Pandiaraj : 94441 14277 • **New Delhi :** Vijay Pahuja : 20250414 • **Kohima :** Povotso Lohe : 94360 00860

सम्मेलन के नये संरक्षक सदस्य

संरक्षक सदस्य संख्या – ००१
नाम : परमानन्द चूड़ीवाला स्मृति ट्रस्ट
प्रतिनिधि : श्री अतुल चूड़ीवाल
पद : ट्रस्टी
कार्यालय का पता :
२३४/३ए, ए.जे.सी. बोस रोड
एफ.एम.सी. फोरचूना, ब्लॉक–A11, चौथा तल्ला
कोलकाता–७०० ०२०
टेलीफोन : ०३३–२२८७–५७३१
मोबाइल : ९८३००६५९२१
फैक्स : ०३३–२२८७–१४३६
ई–मेल: atul@krishirasayan.com
निवास: ४, नेशनल लाइब्रेरी एवेन्यू
कोलकाता–७०० ०२७

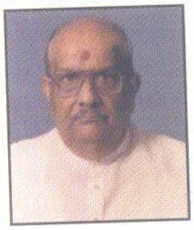

संरक्षक सदस्य संख्या – ००२
नाम : शालिमार पैलेट फीड्स लि.
प्रतिनिधि : श्री चिरंजीलाल अग्रवाल
पद : निदेशक
कार्यालय का पता :
४६सी, चौरंगी रोड
'एवरेस्ट' १७वां तल्ला, रूम नं. – १७A/B/C
कोलकाता – ७०० ०७१
टेलीफोन : ०३३–२२८८६४३९
मोबाईल : ९८३०२९०३३३
फैक्स : ०३३–२२८८२४९६
ई–मेल : sameer@cal.vsnl.net.in

संरक्षक सदस्य संख्या – ००३
नाम : लुडलो जूट एण्ड स्पेशलिस्टस लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री श्याम सुन्दर कानोड़िया
पद : चेयरमैन
कार्यालय का पता :
६, लिटिल रसल स्ट्रीट, चौथा तल्ला
कोलकाता : ७०० ०७१
टेलीफोन : ०३३–२२८३ ९०८१/८२/८३
मोबाईल : ९८३००७५२५६
फैक्स : ०३३–२२८३ ९०७८/२४५४ ३०६४
ई–मेल : ssk@kirtivardhan.com
निवास: २, शनि पार्क, कोलकाता – ७०० ०१९

संरक्षक सदस्य संख्या – ००४
नाम : रूँगटा सन्स प्रा. लि.
प्रतिनिधि : श्री मुकुन्द रूँगटा
पद : निदेशक
कार्यालय का पता :
रूँगटा हाउस, चाईबासा–८३३२०१
(झारखण्ड)
टेलीफोन : ०६५८२–२५६६६१/७६१/८६१
मोबाईल : ०९४३१११०१६१
फैक्स : ०६५८२–२५६४४२
ई–मेल : rungtas@satyam.net.in

संरक्षक सदस्य संख्या – ००५
नाम : श्री इन्फ्रास्ट्रेकचर फाइनेन्स लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री हेमन्त कनोड़िया
पद : निदेशक
कार्यालय का पता :
८६सी, तपसिया रोड, कोलकाता–७०० ०४६
टेलीफोन : ०३३–२२८५६२९४
फैक्स : ०३३–२२८५ ७५४२
ई–मेल : हेमन्त@श्री.कॉम
निवास: कनोड़िया कटिज, ३२/Q, न्यू रोड अलीपुर
कोलकाता–७०० ०२७

संरक्षक सदस्य संख्या – ००६
नाम : अंबुजा रियलीटी डेवलपमेंट लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री हर्षबर्द्धन नेवटिया
पद : चेयरमैन
कार्यालय का पता :
अम्बुजा रियलीटी डेवलपमेंट लिमिटेड
''विश्वकर्मा''
८६सी, तपसिया रोड (साउथ)
कोलकाता – ७०० ०४६
टेलीफोन : ०३३–२२८५–९०२३
फैक्स : ०३३–२२८५–०५६१
ई–मेल : hneotia@vsnl.net
निवास: ७/२, क्वीन्स पार्क, बालीगंज
कोलकाता – ७०० ०१९

संरक्षक सदस्य संख्या – ००७
नाम : जल प्रवाहिका प्रा. लि.
प्रतिनिधि : श्री अनिल सोन्थलिया
पद : निदेशक
कार्यालय का पता :
२३/२४, राधा बाजार स्ट्रीट, दूसरा तल्ला
कोलकाता – ७०० ००१
दूरभाष : ०३३–२२४३–८६७५/७६
मोबाईल : ९८३००३५८८९
फैक्स : ०३३–२२१०–१९३७
ई–मेल : jppl@jalpravahika.com

संरक्षक सदस्य संख्या – ००८
नाम : द्वारकादास सीताराम शर्मा ट्रस्ट
प्रतिनिधि : श्री अमित शर्मा
पद : ट्रस्टी
कार्यालय का पता :
३७, शेक्सपियर सरणी, एस.वी.टावर, तीन तल्ला
कोलकाता – ७०० ०१७
दूरभाष : ०३३–२२८९–५४००
मोबाईल : ०९८३११७७५५०
फैक्स : ०३३–२२८९–५४०१
ई–मेल : info@mirondagroup.com

सम्मेलन के नये संरक्षक सदस्य

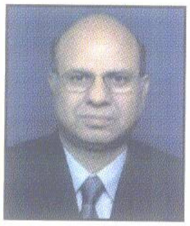

संरक्षक सदस्य संख्या – ००९
नाम : श्री संतोष सराफ
पत्नी का नाम : श्रीमती प्रभा सराफ
पिता का नाम : स्व. हनुमान प्रसाद सराफ
कार्यालय का पता :
रोड कार्गो मूवर्स प्रा. लि.
१, गिबसन लेन, रूम. नं.–२११
कोलकाता – ७०० ०६९
टेलीफोन : ०३३–२२१०–३४८०/३४८५
मोबाईल : ९८३००२१३१९
फैक्स : ०३३–२२३१–९२२१
ई–मेल : roadcargo@vsnl.net
निवास: कोणार्क गार्डेन, B-3-CD, ६,बर्दवान रोड
कोलकाता–७०० ०२७

संरक्षक सदस्य संख्या – ०१०
नाम : सेठ रामकुमार पौद्धार मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट
प्रतिनिधि : श्री राजेश पौद्धार
पद : ट्रस्टी
कार्यालय का पता :
२, ब्रेबोन रोड, ६ तल्ला
कोलकाता–७०० ००१
टेलीफोन : ०३३–२२४८३२५०
मोबाइल : ९८३००५१४१०
फैक्स : ०३३–२२२५१८६६
ई–मेल : rajesh@wondergroup.in
निवास: ए.डी. २२७, सेक्टर–१, साल्ट लेक सिटी
कोलकाता–७०००६४

संरक्षक सदस्य संख्या – ०११
नाम : गौहाटी टी वेयर हाउसिंग प्रा. लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री ओम प्रकाश खण्डेलवाल
पद : प्रबन्धक संचालक
कार्यालय का पता :
जी.एस.रोड, क्रिश्चियन बस्ती, गुवाहाटी–७८१००५
टेलीफोन : ०३६१–२३४३०८३
मोबाईल : ०९४३५०४५४२५/ ९४३५०१४२९९
फैक्स : ०३६१–२३०६०१३/ २३४९०५७
ई–मेल : gteawl@gmail.com
निवास: जी.टी.एवन्यु कम्पलेक्स
जी.एस.रोड, क्रिश्चियन बस्ती, रूम नं.–१८३,
गुवाहाटी–७८१००५

संरक्षक सदस्य संख्या – ०१२
नाम : धनवन्तरी मेडिकेयर एण्ड रीर्सच सेन्टर प्रा. लिमिटेड
प्रतिनिधि :श्री राजेन्द्र खंडेलवाल
पद : प्रबंध निदेशक
कार्यालय का पता :
'धनवन्तरी हाउस'
४८A/१, डाइमण्ड हार्बर रोड, अलीपुर
कोलकाता–७०० ०२७
टेलीफोन : ०३३–२४४९–३२०४
मोबाईल : ९८३१०८४८४५
ई–मेल : rkdhanwantary@gmail.com
निवास: वृंदावन, ४८ए/१, डायमण्ड हार्बर रोड,
अलीपुर, कोलकाता–७०० ०२७

संरक्षक सदस्य संख्या – ०१३
नाम : सन्मार्ग प्राइवेट लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री विवेक गुप्त
पद : प्रबंध निदेशक
कार्यालय का पता :
१६०बी, चित्तरंजन एवेन्यू,
कोलकाता–७०० ००७
टेलीफोन : ०३३–३०६१५०२१
मोबाईल : ९८३०३३६२००
फैक्स : ०३३–२२४१–५०८७

संरक्षक सदस्य संख्या – ०१४
नाम : श्री सज्जन भजनका
पत्नी का नाम : श्रीमती संतोष भजनका
पिता का नाम : स्व. रामस्वरूप दास भजनका
कार्यालय का पता :
सेंचुरी प्लाईउड (इंडिया) लिमिटेड
६, लाइन्स रैन्ज, कोलकाता–७०० ००१
टेलीफोन : ०३३–२२१०–४३२१/२६
मोबाईल : ९८३००२०७३६
फैक्स : ०३३–२२४८–३५३९
ई–मेल : sajjan@centuryply.com
निवास: श्रीराम गार्डेन्स, फ्लैट–१०ए
१५, वेल्वेडियर रोड, अलीपुर, कोलकाता–७०० ०२७

संरक्षक सदस्य संख्या – ०१५
नाम : झारखंड इस्पात प्रा.लि.
प्रतिनिधि : श्री रामचन्द्र रूँगटा
पद : प्रबंध निदेशक
कार्यालय का पता :
पंजाब नेशनल बैंक के पास, मेन रोड
रामगढ़ कैंट, जि.रामगढ़, झारखण्ड
टेलीफोन : ०६५५३–२२४६०१/२२२३४०
मोबाईल : ०९३३४०७४२८८/०९४३१९४१४६४
फैक्स : ०६५५३–२२४९३९/२२४९३४
ई–मेल : jiplramgrh@gmail.com

संरक्षक सदस्य संख्या – ०१६
नाम : सुपर स्मेल्टर्स लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री सीताराम अग्रवाल
पद : CMD
कार्यालय का पता :
३९, शेक्सपियर सरणी, तीसरा तल्ला
कोलकाता–७०० ०१७
टेलीफोन : ०३३–२२८९–२७३४
मोबाईल : ९९०३९७५२४३
फैक्स : ०३३–२२८९–२७३५
ई–मेल : cmd@supershakti.in

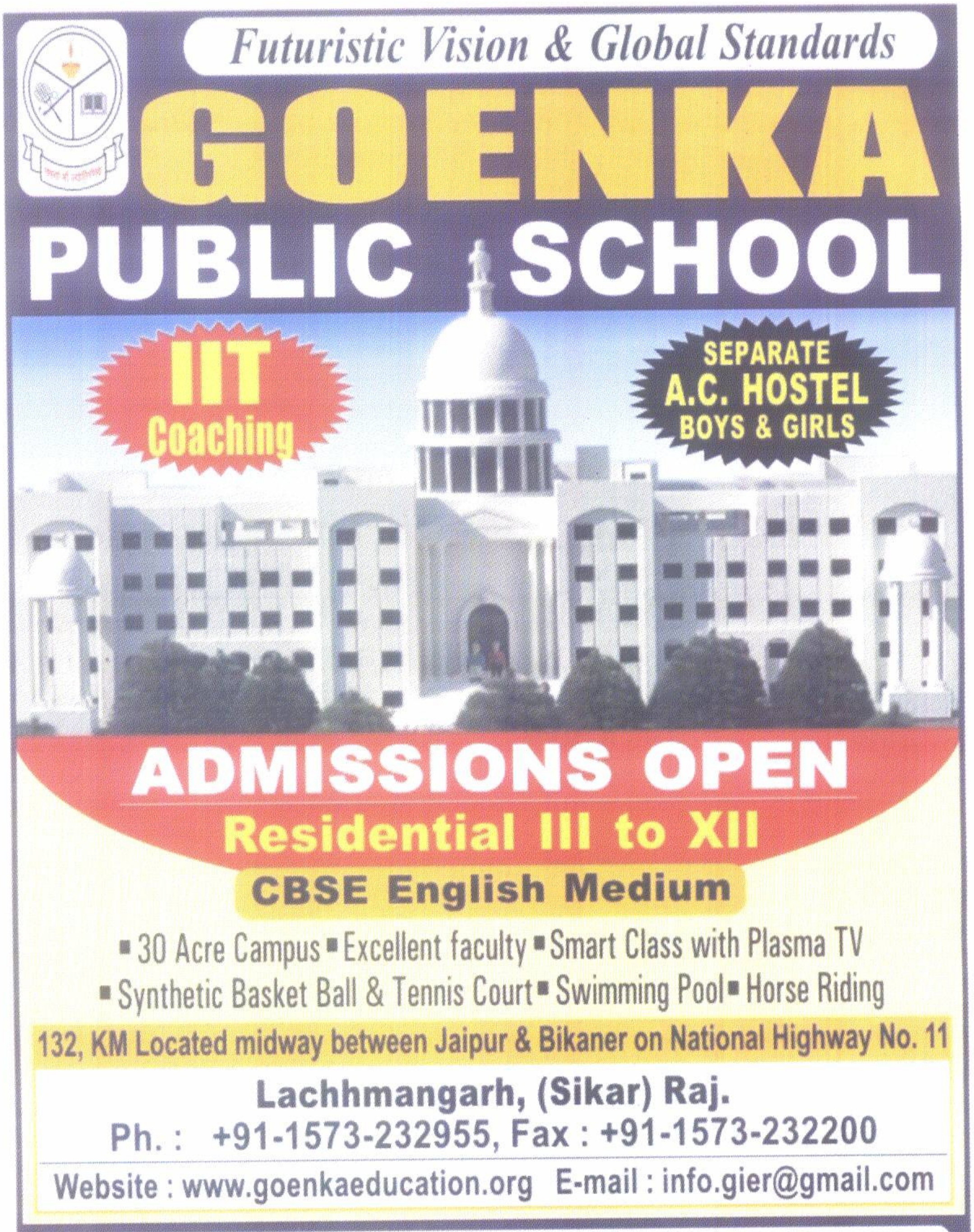
Futuristic Vision & Global Standards
GOENKA
PUBLIC SCHOOL
IIT Coaching
SEPARATE A.C. HOSTEL BOYS & GIRLS
ADMISSIONS OPEN
Residential III to XII
CBSE English Medium
▪ 30 Acre Campus ▪ Excellent faculty ▪ Smart Class with Plasma TV
▪ Synthetic Basket Ball & Tennis Court ▪ Swimming Pool ▪ Horse Riding
132, KM Located midway between Jaipur & Bikaner on National Highway No. 11
Lachhmangarh, (Sikar) Raj.
Ph. : +91-1573-232955, Fax : +91-1573-232200
Website : www.goenkaeducation.org E-mail : info.gier@gmail.com
Contact : 09929078035, 09314022983, 09314022981

गोयनका पब्लिक स्कूल

लक्ष्मणगढ़ में सीकर जिले का एक उपखण्ड मुख्यालय है, शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए है। लक्ष्मणगढ़ नगर में जन्में श्रीमती मोहिनीदेवी गोयनका के सुपुत्र श्री श्याम सुन्दर गोयनका ने वर्ष १९९५ में मोहिनीदेवी गोयनका महिला महाविद्यालय सन् २००० में गोयनका पब्लिक स्कूल, २००४–२००५ में गोयनका कॉलेज ऑफ फार्मेसी तथा २००५–२००६ में मोहिनीदेवी गोयनका शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय स्थापित कर इस क्षेत्र में पूर्व प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च स्तरीय अकादमिक तथा व्यावसायिक शिक्षा की अलख जगायी है। उत्कृष्ट सैद्धान्तिक तथा प्रयोगात्मक शिक्षा के लिए केवल विशाल एवं भव्य भवन ही वांछनीय नहीं है वरन् सुशिक्षित, व्यावसायिक अर्हता सम्पन्न, अनुभवी, कुशल, दक्ष, कर्त्तव्य परायण, उच्च नैतिक चरित्रवांन तथा समर्पित शिक्षक एवं शिक्षिका वृन्द किसी शिक्षण संस्था की प्राण शक्ति होते हैं।

सन् २००० में स्थापित विशाल एवं मनोरम प्रसादीय भवन में संचालित गोयनका पब्लिक स्कूल केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देने वाला एक उत्कृष्ट एवं मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान करने वाला आधुनिक एवं प्रगतिशील सीनियर सैकण्डरी स्कूल है जिसमें आवासी छात्र–छात्राओं के लिए पृथक वातानुकूलित छात्रावास की व्यवस्था है। आधुनिक निर्माण शैली में निर्मित एवं सुन्दर फर्नीचर से सुसज्जित भोजन कक्ष में स्वच्छ पेयजल की निर्दोष व्यवस्था तथा स्वादिष्ट, स्वास्थ्यप्रद एवं पुष्टिकारक शाकाहारी भोजन जिसमें उत्तरभारतीय, दक्षिंण भारतीय, पंजाबी, उपमहाद्वीपीय, चीनी तथा राजस्थानी सभी प्रकार के खाद्य व्यंजन सम्मिलित है आवासी छात्र–छात्राओं को उनकी रूचि एवं मांग के अनुसार परोसे जाते हैं। प्रातः सात बजे ताजा फलों का रस, आठ बजे नाश्ते में दूध तथा अन्य ठोस खाद्य व्यंजन, मध्यान्ह एक बजे भोज, पॉच बजे सांयकालीन अल्पाहार, रात्रि आठ बजे रात्रि भोज तथा रात्रि दस बजे गर्म दूध आवासी छात्र–छात्राओं को दिया जाता है। छात्रावास में योग शिक्षा, गायत्री मंत्र उच्चारण तथा यज्ञायोजन की सामूहिक एवं सुंदर व्यवस्था है जिससे बच्चों के शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास में सहायता प्राप्त होती हैं।

उत्तम उच्च गुणवत्तायुक्त शिक्षक वर्ग व सर्वशैक्षणिक सुविधा युक्त प्रयोगशालाओं के साथ–साथ कक्षा कक्षों में परम्परागत विशाल श्याम पटों के अतिरिक्त रंगीन प्लाज्मा टी.वी.की उपलब्धता इस विद्यालय की विशेषता है। सहशैक्षिक एवं खेलकूद गतिविधियों में इस विद्यालय ने अल्पावधि में ही अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के क्रीड़ा स्थल, खेलकूद उपकरण, सुविधाए तथा संसाधन उपलब्ध करवाए हैं। हॉकी, बॉलीबाल, फुटबॉल, क्रिकेट, टेनिस, घुड़सवारी, तैराकी, पैरासेलिंग, स्केटिंग, रॉक–क्लाइंबिंग, शूटिंग, जूडो तथा कराटे आदि बाह्य खेलकूद में ऊँची कूद, लम्बी कूद, दौड़ आदि–आदि के अतिरिक्त कैरम, शतरंज, टेबल–टेनिस आदि अन्तः–२ खेल कूदों की भी आधुनिकतम सुविधा इस विद्यालय में उपलब्ध है। छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व के विकास हेतु वाद–विवाद, कविता पाठ, संवाद कथन, समाचार पठन, सामान्य ज्ञान, पहेली, संगीत, नृत्य कला, हस्तशिल्प तथा नाट्याभिनय, फोटोग्राफी, स्वच्छ हस्त लेख एवं अन्य साहित्यिक गतिविधियों एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन प्रमुखता से किया जाता है। पर्यावरण की स्वच्छता तथा प्रदूषण मुक्त वातावरण का निर्माण एवं समाज सेवा परियोजनाओं में सम्भागिता इस विद्यालय की नियमित गतिविधियां है जो बच्चों में आत्मविश्वास, दलीय भावना, अनुशासन, सामूहिक नेतृत्व, रचनात्मकता, क्रियात्मकता, सकारात्मकता, सौन्दर्यबोध एवं स्वावलम्बन का बीजारोपण, पल्लवन, पुष्पन एवं फलन करती हैं। संस्था में स्वंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस तथा अन्य सभी राष्ट्रीय, सामाजिक एवं धार्मिक, पर्व एवं समारोह, महापुरूषों की जयन्तियों तथा महत्वपूर्ण राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय दिवसों पर भव्य आयोजन किये जाते हैं।

सुशिक्षित, सुयोग्य, कुशल एवं अनुभवी चिकित्सक एवं परिचारक, कर्मचारियों की सहायता से छात्रों एवं छात्राओं के नियमित स्वास्थ्य परीक्षण की व्यवस्था भी इस विद्यालय परिसर में उपलब्ध है। शिक्षा की इतनी अधिक उत्कृष्ट सुविधाएं होते हुए भी गोयनका पब्लिक स्कूल का शुल्क अन्य प्रतियोगी संस्थाओं की तुलना में बहुत कम है। वातानुकूलित छात्रावास में सुरक्षित एवं सुविधायुक्त आवास संतुलित, स्वास्थ्यप्रद, पुष्टिकारक, स्वादिष्ट तथा प्रातः ७ बजे से लेकर,रात्रि १० बजे तक सात बार परोसे जाने वाले खाद्य व्यंजन २४ घंटे नियमित स्वास्थ्य परीक्षण की सुविधा एवं छात्रावास में रहने वाले बालक–बालिकाओं की सुरक्षा तथा मनोरंजन की व्यवस्था है। यही कारण है कि गोयनका पब्लिक स्कूल लक्ष्मणगढ़ में लगभग ७० प्रतिशत छात्र–छात्राएं अपने निवास स्थान से प्रतिदिन अध्ययन हेतु आते हैं तथा ३० प्रतिशत विद्यार्थी आवासीय छात्र–छात्राओं के रूप में यहाँ अध्ययन करते हैं। इस अनुपात में वृद्धि के प्रयास जारी है तथा छात्रावास में आवास कर सकने वाले विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि करने के लिए अतिरिक्त छात्रावास, भोजन एवं सायंकालीन विशेष अध्ययन एवं अध्यापन कक्षों का निर्माण कराया जा रहा है। अपनी उदयीमान तथा नवोदित संतति के सुरक्षित ,सुनिश्चित सफल एवं उज्ज्वल भविष्य को सुनिश्चित करने के लिए अभिभावक रेगिस्तान में नख़लिस्तान का आभास कराने वाले गोयनका पब्लिक स्कूल का एक उत्कृष्ट एवं मूल्य आधारित संस्था के रूप में चयन कर सकते हैं।◆

IISD

SREI Foundation

A Gateway to Careers

FOR GRADUATES
THE ULTIMATE PROFESSIONAL EDGE

MBA

CONVENIENT
WEEKEND CLASSES
AVAILABLE

EXCELLENT OPPORTUNITY FOR MASTER DEGREE IN MANAGEMENT WHILE WORKING IN OWN CAREER.

Specialisations offered

- Marketing
- Finance
- Human Resource Management
- Information Technology

Facilities :

- Most Convenient and well-connected location in Salt Lake, next to the Eastern Zonal Cultural Centre.
- State of the art Infrastructure.
- AC Class Rooms.
- Computer Laboratory with Broad Band Facility.
- Eminent Highly Qualified and Experienced Faculty.
- Intensive Teaching Learning Environment.
- Self-instructional Study Materials for all Subjects.
- Tutorials, Personalized Coaching, Seminars and Workshops.
- Corporate Interface and Guest Lectures by Experts.
- Soft Skills, Interview Training and Mock Test.
- Modern Library.
- Convenient Class Timings and Weekend Classes.
- Cafeteria Facility.
- Best Affordable Fees.
- 10% Discount for SC / ST / OBC and Defence Ward Candidates.
- Stipend / Loans available

Degree Conferred by Punjab Technical University Approved By UGC, Ministry of HRD, GoI, and DEC.

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata 700 106

Ph.: 2335 2378/2861, Fax: 2335 2379

E-Mail: iisdedu@rediffmail.com, Website : www.iisdindia.in

लघु कथा

कौवा है.....

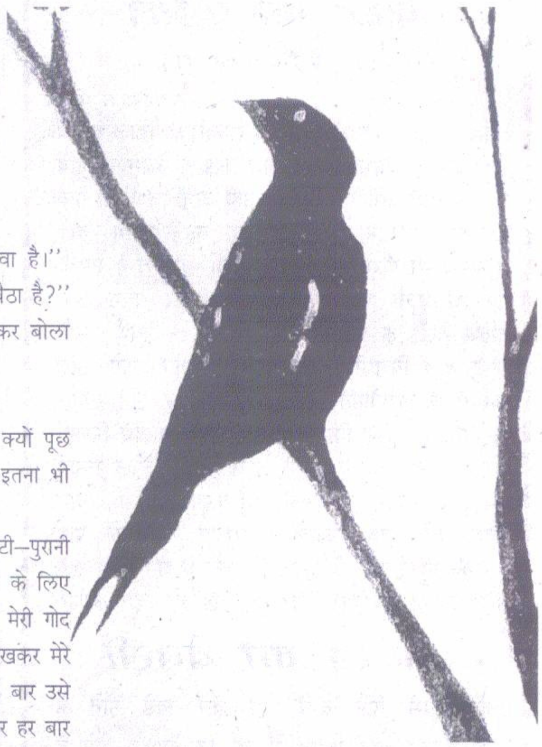

एक बहुत बड़े घर में ड्राइंग रूम में सोफे पर एक ८० वर्षीय वृद्ध अपने ४७ वर्षीय पुत्र के साथ बैठे हुए थे। पुत्र बहुत बड़ा विद्वान था और अखबार पढ़ने में व्यस्त था। तभी कमरे की खिड़की पर एक कौवा आकर बैठ गया।

पिता ने पुत्र से पूछा – ''ये क्या है?''

पुत्र ने कहा – ''कौवा है।''

कुछ देर बाद पिता ने पुत्र से दूसरी बार पूछा – ''ये क्या है?''

पुत्र ने कहा–''अभी तो मिनट पहले तो मैंने बताया था कि ये कौवा है।''

जरा देर बाद बूढ़े पिता ने पुत्र से फिर से पूछा –''ये खिड़की पर क्या बैठा है?''

इस बार पुत्र के चेहरे पर खीझ के भाव आ गए और वह झल्ला कर बोला ''ये कौवा है, कौवा!''

पिता ने कुछ देर बाद पुत्र से चौथी बार पूछा–''ये क्या है?''

पुत्र पिता पर चिल्लाने लगा–''आप मुझसे बार–बार एक ही बात क्यों पूछ रहे हैं? चार बार मैंने आपको बताया कि ये कौवा है। आपको क्या इतना भी नहीं पता। देख नहीं रहे कि मैं अखबार पढ़ रहा हूँ?''

पिता उठकर धीरे–धीरे अपने कमरे में गया और अपने साथ एक बेहद फटी–पुरानी डायरी लेकर आया। उसमें से एक पन्ना खोलकर उसने पुत्र को पढ़ने के लिए दिया। उस पन्ने पर लिखा हुआ था : ''आज मेरा तीन साल का बेटा मेरी गोद में बैठा हुआ था तभी खिड़की पर एक कौवा आकर बैठ गया। उसे देखकर मेरे बेटे ने मुझसे २३ बार पूछा– पापा–पापा ये क्या है? – और मैंने २३ बार उसे बताया – बेटा, ये कौवा है। हर बार वो मुझसे एक ही बात पूछता और हर बार मैं उसे प्यार से गले लगाकर उसे बताता – ऐसा मैंने २३ बार किया।''

:: थोड़ा हँस लें ::

खास कहाणियां

❑''बा स्यामनै हाळी पहाड़ी देखरया हो नै।''

''देखरयो हूं, पण ई पहाड़ी सूं कोई खास कहाणी जुड़ी है कै?''

''हां, कई खास कहाणियां जुड़ी है। अेक बार अेक प्रेमी अर प्रेमिका इण पहाड़ी पर चढ्या अर फेरूं नी लोट्या।

'के होयो उणा कै?''

''बै लोग पहाड़ी रै दूसरी कानी उतरगा।''

बाबाजी रै प्रवचन

❑अेक बाबाजी प्रवचन कर रैयो थो। अेक आदमी उण रो प्रवचन सुण कर घणों प्रभावित हुयो। प्रवचन खतम होयां पछै बो बाबाजी रै कनै आकर उण रै कान में बोल्यो, महाराज, कोई ओपरी लुगाई नै बस में करणै रो मंत्र बताओ।'

'यो मंत्र ई आवतो तो म्हें साधु ई क्यूं बणतो' बाबाजी रो पडूतर हो।

फ्यूज

❑एक बार छेदीलाल रामलीला में रावण बने। नाटक के दौरान अंगद ने कहा, है कोई माई का लाल जो मेरे पैर हिला दे।

उसके इतना कहते ही बत्ती चली गई। रावण बने छेदीलाल ने तुरंत अपनी बुद्धिमता दर्शायी और दरबारियों से बोले तुम में से चार छः अंगद का पांव उठाने की कोशिश करो और बाकी सब देखो कहीं बत्ती का फ्यूज तो नहीं उड़ गया है।

कविताएँ:

ब्याह को पंडाल

(मारवाड़ी भाषा में)

- राधेश्याम पोद्दार

गरीबाँ की छोर्‌याँ सिसक रही, थे लाखाँ को पंडाल बणायो।
घड़ी दो घड़ी शोभा करली, पण कोई क काम न आयो।
घणी छोरियाँ क्वाँरी बैठी, वह नहीं अगणित पीसो पायो।
मात पिता गुजरान कर है, घुट–घुट करके जनम गँवायो।
थे समाज स पीसो पायो, पर समाज–हित में न लगायो।
पेट भर कुत्तो भी निजको, इसमं कौन बड़ाई पायो।
देख्या देखी क सौद मं, थे तो धन न व्यर्थ गमायो।
ऊंडी बात बिचारी कोनी, बणिया होकर घाटो खायो।
मन में थे लक्ष्मीपति विष्णु, रत्ती भर भी नहीं सहिष्णु।
दो पीसा भी दिया किसी न, तो उसन दस बार गिणायो।
चंचल लक्ष्मी सदा न रहणी, चोखा चोखा काल समायो।
धन धरती नहीं संग में चाली, क्यूं बडपन को ढ़ोंग रचायो।
बहती गंगा हाथ पखालो, बारम्बार न मौको पायो।
धन की तीजी गति निश्चित है, झूठो थे मन न भरमायो।
गरीबाँ की छोर्‌याँ सिसक रही, थे लाखाँ को पंडाल बणायो।

जनता की बेबसी

वही घिसे पिटे चेहरे, हर बार खड़े होते हैं
जनता का खून चूसने में जो कि माहिर होते हैं
फिर भी जनता बेबस हो इनको ही वोट देती है।
नतीजन, अपनी अर्थी और कफन को खुद ही तो ढोती है।
गरीबी, अशिक्षा के दलदल से उबर नहीं पाती है
रोटी के बदले वह तो वादे खाकर जीती है
अंधकार में भटक रही है, मार्ग नहीं पाती है
संविधान की त्रुटियों के कारण हरदम रोती है
एक बार चुन जाने पर ये निरंकुश शासक होते हैं
मनमानी चाहे जो करते निज पाकेट भरते हैं
इस हमाम में सभी हैं नंगे, को संविधान बदलावे
निज स्वारथ की अमृत–बेलि को, को जानबूझ कटवावे
जनता इनकी नजर में मेमना, कटने को पैदा होती
भक्ष्य भोज्य है इनकी वह तो इनकी नीति यह कहती
खून हुआ ठंडा जनता का, इससे सब कुछ सहती
बिना क्रान्ति के परिवर्तन के, यही रहेगी नियति

P-180, C. I. T. Road, Scheme VI M
Kankurgachi, Kolkata - 700 054
Phone : (033) 2320 3082
Mobile : 9831475891

निवेदन

सेवा में
महामंत्री महोदय,
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
152बी, महात्मा गाँधी रोड,
कोलकाता–700007

महोदय,

❑ कृपया मेरे पते में निम्न सुधार करने की कृपा करें।

❑ मैं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विशिष्ट/आजीवन/संरक्षक सदस्य बनना चाहता हूँ। कृपया निम्न पते पर मुझे एक सदस्यता फार्म डाक द्वारा भेजने की कृपा करें।

- ❑ विशिष्ट सदस्यता 500/–
- ❑ आजीवन सदस्यता 5000/–
- ❑ संरक्षक सदस्यता 51000/–

मेरे वर्तमान पता निम्न है

नाम : ____________________
पता : ____________________
____
शहर : ____________________
पिन कोड : ____________________
फोन नं. : ____________________
मोबाईल : ____________________
ई–मेल : ____________________

____
हस्ताक्षर

अपनी-अपनी किस्मत है ताऊ!

युवावस्था में ताऊ शेखावाटी अपनी धर्मपत्नी के साथ

किस्मत

जिस बाड़ी में झाड़ उगी है, उस बाड़ी के बाड़ नहीं है
बाड़ बनी है जिस बाड़ी के, उस बाड़ी में झाड़ नहीं है
वाह रे मेरे ऊपर वाले! तेरा कोई जवाब नहीं है
दाड़ है वहां चना नहीं है, चना है वहां दाड़ नहीं है
वर्षा की हर बूंद मोती नहीं होती
हर सुन्दर आंख में ज्योति नहीं होती
यह तो अपनी–अपनी किस्मत है ताऊ!
और, किस्मत किसी की बपौती नहीं होती

बेवफाई

क्या गलत है सब सही तो हो रहा है
जो भी होना चाहिए था हो रहा है
किस जमाने में नहीं थी बेवफाई
बावरे मन! खामखां क्यों रो रहा है

शौहर

न तो पीते न सुख से खाते हैं
खड़े कोने में दुम हिलाते हैं
ताऊ जब से बने हैं वे 'शौहर'
उनके ये तजुर्बे बताते हैं

बुढ़ापा

फसल पक रंग धानी हो गई है
खुदा की मेहरबानी हो गई है
बहकने का नहीं खतरा रहा अब
जवानी अब सयानी हो गई है

जवानी

कहते हैं लोग उनके
चेहरे पे है रवानी
किसकी सगी हुई है
कुछ सोच यह जवानी

महक मनुहार

कली जब–जब भी मुस्कराती है
मधुकरों की जमात आती है
किसी भी मन को तो जमाने में
महक मनुहार ही लुभाती है

हालात

हर तरफ जोर जबरदस्ती है
न कोई चीज मिले सस्ती है
फिर भी जब हालचाल पूछा तो
लोग बोले कि यार! मस्ती है

कर्मफल

जो खुदा का नाम ले–ले मर गए हैं
सोच ताऊ क्या सभी वे तर गए हैं
याद रख सब को भुगतना ही पड़ेगा
फल किए का जो यहां पर कर गए हैं

सौत

जिन्दगी को मान बख्शा मौत ने
रात की रौशन दिए की जोत ने
'ध्यान खाविन्द का रखो' सिखला दिया
जाने कितनी बीबियों को सौत ने

पताः ताऊ शेखावाटी 32,जवाहर नगर, सवाई माधोपुर– 322001 (राज.) 094143–15094

राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति परिषद

रजत जयन्ती समारोह

कुरजाँ प्रत्रिका विमोचन करते हुए।

'परिषद' ने अपने सक्रिय कार्यकाल के पच्चीस वर्ष पूरे कर लिए हैं। समारोहों की कड़ी में प्रथम आयोजन ३१ मार्च २००९ को चेम्बर भवन सभागार–बिष्टुपुर में सम्पन्न हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि अ.भा.मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलालजी रूंगटा थे। विशिष्ट अतिथि–रांची एक्सप्रेस के पूर्व सम्पादक एवं पूर्व राज्य सभा सदस्य श्री अजय मारू थे। कार्यक्रम का उद्घाटन सुप्रसिद्ध उद्योगपति, समाज सेवी एवं सुचिन्तक श्री राजकुमार अग्रवाल ने किया। अध्यक्षता 'परिषद' के कार्यकारी अध्यक्ष श्री ब्रह्मदत्त शर्मा ने की। स्वागत भाषण परिषद के अध्यक्ष डॉ. मनोहर लाल गोयल ने किया और प्रतिवेदन महासचिव श्री महेश अग्रवाल ने प्रस्तुत किया। मंच पर समाजरत्न चिमनलाल भालोटिया सेवा सम्मानों के प्रायोजक भालोटिया परिवार के श्री चन्दूलाल जी, श्री ग़जानन्द जी, श्री अरुण भालोटिया और श्री बिमल भालोटिया उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री अनिल मोदी ने किया।

प्रारंभ में मीरां एवं स्व. चिमनलाल भालोटिया के चित्रों पर माल्यार्पण किया गया और दीप प्रज्जवलित कर अतिथियों ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम के शुरूआत में एक भव्य अलंकार समारोह में श्री नन्दलालजी रूंगटा और श्री महावीर प्रसाद जी सिंघानियां को 'समाजरत्न' सम्मान दिया गया। उसके पश्चात समाजरत्न चिमनलाल भालोटिया सेवा सम्मानों की कड़ी में समाज सेवा के लिए श्री दिलीप गोयल गोसेवा के लिए श्री महेशचंद शर्मा तथा साहित्य सेवा के लिए श्रीमति सुधा गोयल सम्मानित किए गए। 'परिषद' की पत्रिका 'कुरजाँ' के नाम पर प्रारंभ किया गया 'कुरजाँ सम्मान श्री अजय मारू (राँची) को लिया गया।

इस अवसर पर 'कुरजाँ' पत्रिका के विशेषांक का लोकार्पण समाजसेवी श्री गजानन्द भालोटिया ने किया। मुख्य अतिथि श्री नन्दलालजी रूंगटा ने अपनी बातें राजस्थानी (मारवाड़ी) में ही कहीं। अध्यक्षीय भाषण तथा धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात सुश्री प्रिया बजाज एण्ड पार्टी द्वारा राजस्थानी सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए श्री अशोक गोयल, राम अवतार शर्मा, बाबूलाल बोहरा, नरेश अग्रवाल, श्रवण मित्तल, अरुण गनेड़ीवाला, महेश गोयल, चंद्रशेखर प्रसाद, मामचंद अग्रवाल, नवीन अग्रवाल, राजेश शर्मा आदि जी जान से लगे थे। कार्यक्रम के पश्चात सभी ने सहभोज का आनन्द लिया।◆

आदर्श कन्या शाला में
वाटर कूलर की स्थापना

"तपती गर्मी में अगर छात्र–छात्राओं को शुद्ध शीतल पेय जल उपलब्ध हो तो उनकी शिक्षा ग्रहण करने की क्षमता में वृद्धि होती है। आदर्श कन्या शाला में एक्वागार्ड युक्त वाटर कूलर की स्थापना करवा कर म.प्र.मारवाड़ी सम्मेलन ने शिक्षा प्रोत्साहन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।" ये उद्‌गार थे नगर के सुप्रसिद्ध उद्योगपति समाजसेवी डॉ. कैलाश गुप्ता के जो उन्होंने आदर्श कन्या उच्चतर माध्यमिक शाला, प्रेमनगर में म.प्र.मारवाड़ी सम्मेलन के तत्वाधान में स्थापित वाटर कूलर लोकार्पण के अवसर पर मुख्य अतिथि की आसंदी से व्यक्त किए।

शाला समिति के अध्यक्ष ओमदत्त मानोट एवं आचार्या श्रीमती अंजू मिश्रा ने अतिथिगण का स्वागत करते हुए संयंग की स्थापना को अपरिहार्यत: निरुपित किया और कृतज्ञता ज्ञापित की। सम्मेलन

के महामंत्री रमेश गर्ग ने बालिका शिक्षा प्रोत्साहन में संलग्न संस्था हमारा जबलपुर के अध्यक्ष डॉ. कैलाश गुप्ता द्वारा आयोजन का मुख्य आतिथ्य स्वीकार करने हेतु आभार व्यक्त किया। शाला के संरक्षक केवल कृष्ण नागपाल ने जानकारी दी कि सम्मेलन के अध्यक्ष और उनके सहपाठी अरुणकान्त अग्रवाल की धर्मपत्नी उर्मिला देवी की प्रेरणा से ही उक्त संयंग मुम्बई निवासी कमल कुमार बूबना द्वारा स्व. श्रीमती चन्द्रावली देवी सुवटा देवी बूबना की स्मृति में उपलब्ध कराया गया।

अरुणकान्त अग्रवाल ने आयोजन की अध्यक्षता करते हुए कहा कि सम्मेलन का गठन ही समाज के विभिन्न घटकों को एकत्रित कर समाज हित में कुछ जनोपयोगी कार्य करने हेतु किया गया है और इस आयोजन से म.प्र.मारवाड़ी सम्मेलन ने अपने अहम् उद्देश्यों को सार्थकता प्रदान की है। संयंम की स्थापना में श्यामसुन्दर माहेश्वरी एवं विपुल लालन के विशेष सहयोग की सराहना की गई।

इस अवसर पर कमलेश नाहटा, इं.एस.के.गुप्ता, आर.पी. अग्रवाल, ओ.पी.उपाध्यक्ष, श्री दयाराम पटेल, श्रीमती नीता चावला आदि की उपस्थिति उत्साहवर्धक थी।◆

राष्ट्रपति भवन में विभूतियों का सम्मान

राष्ट्रपति भवन में आयोजित सम्मान समारोह में राष्ट्रपति प्रतिभा देवी सिंह पाटिल, श्री देवी सिंह शेखावत, श्यामल कुमार सेन, अलका बांगड़, शारदा फतेहपुरिया, श्री अंशुमान सिंह व श्री मामराज अग्रवाल

कोलकाता : मामराज फाउंडेशन की ओर से राष्ट्रपति भवन में गत सोमवार, २३ मार्च को सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल ने राजस्थान तथा कोलकाता में मेधावी छात्रों को सम्मानित करने व विद्या प्रसार, जनकल्याण जैसे कार्यों को प्रोत्साहित करने के लिए राजस्थान व गुजरात के राज्यपाल न्यायमूर्ति अंशुमान सिंह तथा पश्चिम बंगाल के पूर्व राज्यपाल श्यामल कुमार सेन को राष्ट्रीय ज्ञानोदय सम्मान, समाज सेवा में उत्कृष्ट कार्य के लिए समाज सेबिका व मनोविकास केन्द्र, कोलकाता की संस्थापिका, निदेशक, सचिव डॉक्टर शारदा फतेहपुरिया तथा श्रीमती अलका बांगड़ को राष्ट्रीय सेवा रत्न सम्मान से सम्मानित किया गया। महामहिम राष्ट्रपति ने अपने कर कमलों से सम्मानितों को सम्मान पत्र, स्मृति चिन्ह, प्रमाण पत्र एवं एक लाख रुपये का चेक प्रदान किया। स्वागत भाषण में मामराज अग्रवाल ने फाउंडेशन की गतिविधियों तथा उपलब्धियों का विवरण दिया। समारोह का संचालन करते हुए महावीर प्रसाद रावत ने सभी सम्मानितों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री व विश्वबैंक के पूर्व वरिष्ठ सलाहकार डॉक्टर रामगोपाल अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर श्री देवीसिंह शेखावत, सांसद सुधांशु सील, विजय दरडा, वरिष्ठ पत्रकार श्याम आचार्य के अलावा कोलकाता तथा राजस्थान के विशिष्ठ उद्योगपति, समाजसेवी, पत्रकार, साहित्यकार व राजनेता उपस्थित थे।◆

"गणगौर के गीतों का सीडी विमोचन"

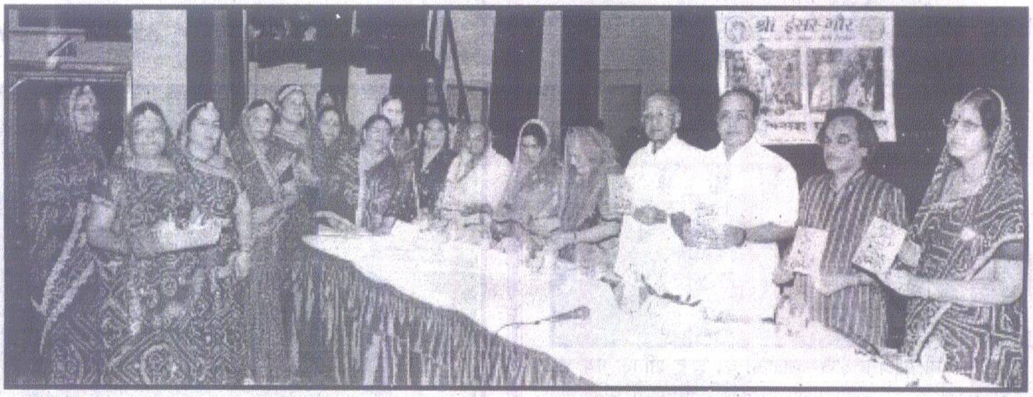

हैदराबाद–सिकन्दराबाद मारवाड़ी महिलाओं का गत ३० वर्षों से कार्यरत हैदराबाद–सिकंदराबाद मारवाड़ी महिला संगठन से श्रीमती रत्नमाला साबू अध्यक्षा एवं मंत्राणी कलावती जाजू ने चैत्र मास के शुभ अवसर पर जो पूरे राजस्थानी समाज में प्रख्यात गणगौर त्योहार जो बहने–बालिकायें गोरइसर ने पूजा सोलह दिन पूजती हैं और गीत गाती हैं वह गीत रसीली आवाज, नई धुन में संगठन की बहनों ने पिरोया है विशेष गीतों की सीडी के विमोचन के अवसर पर सांस्कृतिक रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सम्माननीय अतिथि श्रीमती मामाजी माहेश्वरी इन्कम टैक्स कमीशनर प्रसिद्ध उद्योगपति श्री रामगोपालजी गोयनका, प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता श्री अमृत कुमार जैन, अंतराष्ट्रीय ख्याती प्राप्त कवि श्री वेणु गोपालजी भट्ट के उपस्थिति में हैदराबाद को प्रमुख महिला कार्यकर्ता श्रीमती, दुर्गादेवी मावधनों, आंध्र प्रदेश महेश के आप्र, अर्बन बैंक लिमिटेड की पूर्व उपाध्यक्ष श्रीमती निर्मला देवी साबू एवं शांतादेवी लोहिया ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का प्रारंभ किया गणेश पूजा एवं गणेश वंदना से नन्हें मुन्ने बालकों ने सुन्दर नृत्य प्रस्तुत की।

हैदराबाद–सिकन्दराबाद के करीब १००० बहनोंने एवं भाइयों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया ३ मार्च २००९ को आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा संचालित इंदिरा प्रियदर्शनी हॉल–हैदराबाद में हुआ इस अवसर सदस्याओं ने एवं बालिकाओं ने हास्यनाटिका, घुमर, होली के गीत, व्यंग, विज्ञापन नाटिका, एकल नाटिका, नृत्य में प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम का संचालन श्रीमती सुमन सोनी ने बड़े ही मनमोहक अंदाज में संचालित किया २१ गीतों से पिरोइ गयी गणगौर के विशेष अवसर पर गाये जानेवाले गीतो का संकलन श्रीमती शकुंतला चोकडा ने किया इस सीडी में अपनी सुमधुर आवाज से गीतों को प्रस्तुत किया श्रीमती शकुंतला चोकडा, रीता दम्मानी, सावित्री देवी दरक, किरण बजाज़, लता वर्मा ने गाया।

संयोजिका शकुंतला राठी, कलावती लड्ढा के सानिध्य में हुआ गणगौर यह गीतों की सीडी "आया गोर का त्योहार" का विमोचन सभी गायिकाओं ने उपस्थित सम्मानीय अतिथियों से किया। हैदराबाद–सिंकदराबाद मारवाड़ी महिला संगठन के इस प्रयत्न को सभी ने सराहा और कहा संगठन हर माह बहुत अच्छा कार्य करती है।

महिला संगठन के पहले प्रयोजन का भी उल्लेख किया उसके पूर्व विदीत रहे संगठन द्वारा गीतमाल जन्म से विवाह तक नेगाचार एवं विभिन्न अवसरों पर गाये जाने वाले ७०० पृष्ठों का संग्रह "भाग्यनगर राजस्थायी गीतमाला" एवं बारह माह के तीज त्योहार विर्धा का कहानी संग्रह किताब, रानी जोगा कैसेट एवं परिणय स्वर लहरी बिनायक से विदाई तक कैसेट तैयार किया गया यह पांचों अैटम संग्रहनीय है।

पुष्पा किमती ने धन्यवाद दिया, इस कार्यक्रम को सफल बनाया संयोजिकायें गंगा सोमाणी, चंद्रकला बंग, शकुंतला मोदाणी, प्रेमकांता बाहेती, जयश्री, शोभा डागा, लीला बजाज, लता साबू, गुलबी तोषनीवाल, राजकुमारी जाजू, प्रेमलता तापडीया, दुर्गादेवी मूँदड़ा एवं संगठन कि सदस्याओं ने सुचारू रूप से कार्यक्रम संपन्न किया।

कुमारी टीनी कोमल ड्रोलिया भी सराहना

दिमापुर, नागालैण्ड में आयोजित १६वें नेशनल चिल्ड्रेन साइन्स कॉंग्रेस के लिए १६ प्रतिभाशाली स्कूल के बच्चों का चुनाव झारखण्ड से किया गया था। इस आयोजन में पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम भी शामिल हुए थे।

वर्ग ९ की छात्रा कुमारी टीनी कोमल ड्रोलिया भी इन १६ बच्चों में चुनी गयी थी। उसका विषय था जल जमाव-जीवन बचाव। उसके प्रस्तुतिकरण की सबने सराहना की। कुमारी ड्रोलिया इन १६ बच्चों में भी सर्वप्रथम आई। कुमारी ड्रोलिया को सम्मेलन परिवार की ओर से बधाई।

मारवाड़ी सम्मेलन, मारवाड़ी युवा मंच व चाईबासा जागृति शाखा में

रंग-रंगीलो का आयोजन

होली के अवसर पर चाईबासा सतरंगी छटा बिखर गयी, मौका था मारवाड़ी सम्मेलन, मारवाड़ी युवा मंच व चाईबासा जागृति शाखा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित रंग–रंगीलो राजस्थान। कार्यक्रम का शुभारंभ मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष व प्रसिद्ध उद्योगपति नन्दलाल रूँगटा विशिष्ट अतिथि उद्योगपति राजकुमार शाह, मारवाड़ी युवा मंच के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष बलराम सुल्तानिया व जिला अध्यक्ष प्रकाश पंसारी ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर किया, संचालन जिला सचिव राजकुमार मूंधड़ा ने किया, इस अवसर पर श्री नन्दलालजी ने कहा कि राजस्थानी संस्कृति बहुत ही समृद्ध है। इस तरह के आयोजन से लोगों को अपनी संस्कृति को समझाने का मौका मिलता है। टी.वी. के इस युग में अपनी संस्कृति की प्रस्तुति निःसंदेह प्रशंसनीय है।

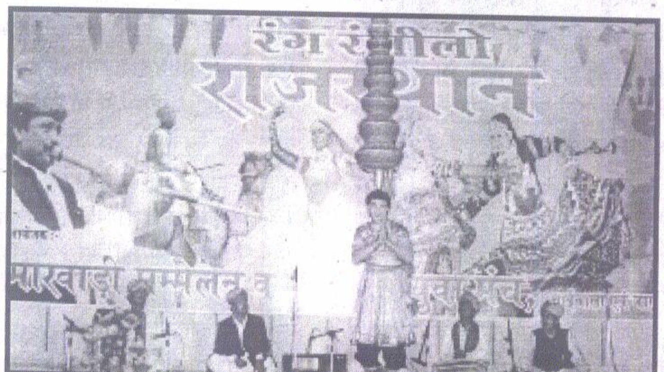

राजस्थान कला मंच बीकानेर के कलाकारों ने गीत, नृत्य व संगीत प्रस्तुत कर पूरे वातावरण को राजस्थानी रंग में रंगा दिया, हाकिम खां मांगणियार के गणेश बंदना व लालखां मांगणियार ने केसरिया बालम पधारो म्हारे देश गीत के साथ किया, कुमारी भावना मधु व पूनम ने चरी नृत्य प्रस्तुत किया, कुमारी रजनी, नेहा, वंदना, स्वाति व रेखा ने धूमर, चिरमी, कालबेलिया, रास आदि नृत्य राजस्थानी गीतों की धुन पर प्रस्तुत कर दर्शकों की वाहवाही लूटी, अंतर्राष्ट्रीय भवाई नर्तक सुरेश व्यास ने सिर पर ग्लास रखकर व ग्लास पर एक–एक कर ग्यारह घड़े रखकर तलवार की धार, कांच के टुकड़े पर परात का संतुलन बनाकर नृत्य प्रस्तुत किया। श्री व्यास जब फर्श पर रखे नोटों को मुंह से उठाये तो दर्शक मंत्रमुग्ध हो गये, सुरेश व्यास, कुमारी भावना व अन्य कलाकारों द्वारा राधा–कृष्ण की छेड़छाड़ की दृश्य वाला लोली, नृत्य, कुमारी रजनी व साथियों ने गणगौर नृत्य की लोगों ने खूब प्रशंसा की, धरती धोरो री गीत की धुन पर सभी कलाकारों ने झूमते हुए कार्यक्रम का समापन कर दिया। सांस्कृतिक कार्यक्रम का संचालन राजस्थानी कला मंच के प्रमुख व आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के उद्घोषक एचडी रतनु ने किया, कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रकाश पसारी, मनीष पिरोजिया, वन चांडक, राकेश बुधिया, जोनी सर्राफ, अनिल मुरारका, सुनील रूँगटा, राजकुमार मूंधड़ा आदि ने सराहनीय योगदान किया।◆

सौल्लास सम्पन्न हुआ राजस्थान दिवस

राजस्थान परिषद के तत्वावधान में आयोजित ६०वां राजस्थान दिवस समारोह भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। ओसवाल भवन के सभागार में इस अवसर पर भारी संख्या में प्रवासी राजस्थानी जुटे। समारोह की अध्यक्षता लोकप्रिय युवा विधायक श्री दिनेश बजाज ने की तथा प्रधानवक्ता थे सुप्रसिद्ध पत्रकार तथा राजस्थानी मासिक ''माणक'' के यशस्वी सम्पादक श्री पद्‌म मेहता। सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ श्रीमती सरिता जोशी (मुंबई) विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थी। इस अवसर पर ''धरती धोरां री'' के अमर गायक महाकवि कन्हैयालाल सेठिया पर केन्द्रित एक सुरुचिपूर्ण स्मारिका का विमोचन पत्रकार श्री पद्‌म मेहता के करकमलों से सम्पन्न हुआ। स्मारिका के सह सम्पादक श्री महावीर बजाज ने लोकार्पण हेतु स्मारिका प्रस्तुत की। सर्वप्रथम परिषद के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री जुगल किशोर जैथलिया ने राजस्थान दिवस मानने के उद्देश्यों व औचित्यों पर अपने सारगर्भित विचार रखे। उन्होंने कहा कि वास्तव में यह दिवस संवत् २००६ की चैत्र प्रतिपदा के दिन सरदार पटेल के प्रयास से सम्पन्न हुआ था तथा उन्होंने इसे नव वर्ष का उपहार कहते हुये राजस्थान के लोगों को समर्पित किया था। परन्तु उस दिन अंग्रेजी तारीख ३० मार्च होने के कारण लोगों ने इस तारीख को राजस्थान दिवस बना डाला और यही परम्परा चल पड़ी। सुधार के उद्देश्य लिखे आवेदनों पर भी सरकार ने विशेष गौर नहीं किया।

प्रधान वक्ता के रूप में जोधपुर से पधारे श्री पद्‌म मेहता ने राजस्थानी के प्रचार प्रसार तथा मान्यता के लिये किए जा रहे प्रयासों पर प्रकाश डाला तथा विश्वास व्यक्त किया कि राजस्थानी भाषा को शीघ्र मान्यता मिल जायेगी। उन्होंने अपने अपने घरों से राजस्थानी भाषा के प्रयोग पर भी बल दिया।

ताजा टी.वी. चैनल तथा दैनिक छपते छपते के प्रधान सम्पादक श्री विश्वम्भर नेवर ने भी राजस्थानी को मान्यता दिलाने के लिये एक जुट होकर प्रयास करने के लिये आह्वान किया। लोकप्रिय विधायक श्री दिनेश बजाज ने प्रवासी राजस्थानियों को विक्रम नववर्ष की बधाई देते हुये परिषद द्वारा किये गये कार्यों पर संतोष व्यक्त किया। महाराणा प्रताप की मूर्ति स्थापना के कार्य को एतिहासिक बताते हुये उन्होंने अपने सहयोग का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर उदयिमान चिंतक श्री प्रमोद शाह को ''थॉट्स ओन रीलीजियस पॉलिटिक्स इन इंडिया'' जैसे गम्भीर ग्रंथ के तीन खण्डों में सम्पादन के लिये विशेष रूप से सम्मानित किया गया।

समारोह के प्रारम्भ में श्री रमेश शर्मा नें ''धरती धोरां री'' गीत प्रस्तुत कर लोगों को भाव विभोर कर दिया वहीं सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ श्रीमती सरिता जोशी ने दो मधुर भजन ''म्हें तो जोवां थारी बाट सांवरा रे'' गाकर वातावरण को भक्तिमय बना दिया। सुप्रसिद्ध कवि लाजपत राय 'विकट'' की आतंकवाद के विरुद्ध ओजपूर्ण कविता ''जब तक होगी राजनीति केवल और केवल वोटों की'' प्रस्तुत कर लोगों की भरपूर तालियां बटोरी। श्री शार्दूलसिंह जैन ने स्वागत भाषण देते हुये परिषद के कार्य कलापों का विवरण रखा। धन्यवाद ज्ञापन महामंत्री श्री अरुण मल्लावत ने किया एवं कार्यक्रम का सफल संचालन किया श्री रुघलाल सुराणा जैन ने। मंच पर संस्था के उपाध्यक्ष श्री नन्दलाल शााह एवं परशुराम मूंधड़ा भी उपस्थित थे।

आगन्तुक अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया सर्व श्री बंशीधर शर्मा, गोविन्द नारायण काकड़ा, सम्पत मानधन्या डॉ. अनुराग नोपानी, वंकटलाल गग्गड़ एवं श्रीमती सरोजनी शाह ने।◆

कोलकाता मारवाड़ी महिला सम्मेलन

की सामाजिक गतिविधियाँ

१. १५ अगस्त २००८ स्वतंत्रता दिवस पर ''नया पट्टी श्री प्राइमरी स्कूल में ३०० बच्चों के बैठने के लिए बड़ी छदरिया तथा मिठाई दी गयी।

२. एम.बी.ए के एक छात्र को फीस तथा पुस्तके दी गई।

३. २ अक्टूबर गांधी जयन्ती के शुभअवसर पर फिर नया पट्टी स्कूल में सभी ३०० बच्चों को अच्छी पानी की बोतल तथा बिस्कुट वितरण किया गया।

४. १ फरवरी २००९ को न्यू हरियाणा भवन में नि:शुल्क ''विकलांग शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 94 Artificial Leg, Hand, Wheel chair and Hearing Aid दिये गये सभी विकलांगों तथा उनके साथ आये हुये सभी लोगों के नाश्ता, खाना पीना की व्यवस्था की गयी। इस अवसर पर 'सांसद' मोहम्मद सलीम पूर्व सांसद श्रीमती सरला महेश्वरी जस्टिस श्यामल सेन मुख्य वक्ता रतनजी शाह, पं. बं.मा.सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष लोकनाथजी डोकानिया, पं.बं.मा.म.सम्मेलन की अध्यक्षा शारदाजी लाखोटिया आदि मेहमान उपस्थित थे। पूरा हॉल लोगों से खचाखच भरा था।

५. सिंधारा, दीवाली, होली सभी त्योहार बड़े धूम–धाम से मनाये।

६. काकूड़गाछी में सालोभर प्याउ चलता है।

७. १७४, सी.आर.एवन्यु, २ तल्ल में बुधवार शनिवार को विवाह सम्बन्धी जानकारी का काम चलता है।

बिहार:
निर्वाचित प्रदेश अध्यक्ष का अभिनन्दन

बिहार प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन (स्थायी कोष) द्वारा संचालित श्री रावतमल नोपानी छात्रावास, भागलपुर में सरस्वती पूजा के उपलक्ष्य पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का भव्य आयोजन संपन्न हुआ। जिसका उद्घाटन पूर्वी क्षेत्र के पुलिस उप–महानिरीक्षक श्री रघुनाथ प्र. सिंह, बीएसएनएल के महाप्रबंधक श्री राजीव गुप्ता, सेंट जोसफ स्कूल के प्राचार्य फादर वर्गीस पननगट, बिहार प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन के निर्वाचित प्रदेश अध्यक्ष श्री कमल नोपानी ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर किया। इस मौके पर डीआईजी श्री सिंह ने कहा कि पुस्तक जो माँ सरस्वती के हाथ में है, वह ज्ञान का प्रतीक है। बीएसएनएल के महाप्रबंधक श्री गुप्ता ने अपने उद्बोधन में कहा कि माँ सरस्वती हम सब को आध्यात्मिक एवं भौतिक प्रगति के लिए अनिवार्य रूप से स्वाध्याय करने की प्रेरणा देती हैं। फादर वर्गीस ने कहा कि शिक्षा के बिना देश का विकास संभव नहीं है। प्रदेश निर्वाचित अध्यक्ष श्री कमल नोपानी ने कार्यक्रम प्रशाल में उपस्थित अप्रत्याशित भीड़ को संबोधित करते हुए कहा कि वर्तमान समय में शिक्षा का महत्व काफी बढ़ गया है। बिहार में भी उच्च शिक्षा के प्रति लोग जागरूक हो रहे हैं। कहा कि मन लगाकर पठन–पाठन का कार्य करने से ही अपने लक्ष्य को पाया जा सकता है। छात्रावास के महामंत्री मनोज कुमार जैन ने अपने स्वागत भाषण में छात्रावास की विस्तृत जानकारी दी एवं प्रशाल में उपस्थित सभी मुख्य, विशिष्ट एवं गणमान्य अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया।

मध्यप्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा रामनवमी जुलूस का स्वागत

वासंतेय नवरात्रि में रामनवमी ईश्वर आराधना का परम पुनीत दिवस माना गया है। दिनांक ३ अप्रैल को मध्यप्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा श्रीराम मन्दिर मदनमध्य द्वारा निकाले गए जुलूस का स्वागत करते हुए प्रभु चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए। अध्यक्ष अरुणकान्त अग्रवाल महामंत्री रमेश गर्ग, मुकुन्द दास माहेश्वरी, कैलाशचन्द्र अग्रवाल, संतोष ओसवाल, श्रीमती रश्मि अग्रवाल, श्यामसुन्दर माहेश्वरी, तोलाराम धूत, आर.जी.अग्रवाल, श्रीकृष्ण बियाणी आदि सदस्यों ने पूजन अर्चना की व भगवान से जनमानस को सद्बुद्धि देने व मानवता की सेवा हेतु तत्पर रहने की प्रेरणा प्रदान करने हेतु प्रार्थना की। जुलूस में सम्मिलित लगभग ५०० व्यक्तियों को बिस्कुट के पैकेट व शीतल पेयजल के पाउच उपलब्ध कराए गए।

श्रद्धांजलि

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' का निधन

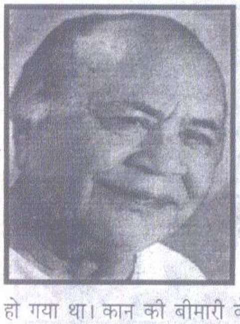

भारत के प्रख्यात साहित्यकार, यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' का ३ मार्च, २००९ को निधन हो गया। अपने जीवन के ७७ वसंत देख चुके यादवेन्द्र शर्मा काफी समय से बीमार चल रहे थे। श्री 'चन्द्र' का नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में लगभग १ महीने से इलाज चल रहा था। उनके फेफड़ों व कान में इन्फेक्शन हो गया था। कान की बीमारी के कारण वे सुन नहीं पा रहे थे तथा मधुमेह और रक्तचाप के कारण बायां हाथ एवं पैर हरकत नहीं कर पा रहे थे। उनका इलाज ३१ जनवरी से २ मार्च ऐम्स में चला किन्तु ३ मार्च को प्रात: संज्ञाशून्य स्थिति में एंबूलेंस पर उनके पुत्र नवरतन, विजयकुमार, कृष्णकुमार बिस्सा, अन्य परिजनों के साथ बीकानेर ले आये तथा पी.बी.एम. अस्पताल के आई.सी.यू. में भर्ती कराया गया। किन्तु सेप्टिसीमिया नामक यह रोग उनके शरीर में इस प्रकार फैल गया कि ३ मार्च को रात्रि २.१५ के आसपास उन्होंने सदैव के लिए आंखें मूंद ली। चन्द्र का अंतिम संस्कार नत्थूसर गेट के बाहर स्थित पैतृक श्मशान घाट पर किया गया। उनके ज्येष्ठ पुत्र नवरतन बिस्सा ने उनकी चिता को मुखाग्नि दी। उनके अंतिम संस्कार में बड़ी संख्या में साहित्यकार, संस्कृतिकर्मी, समाजसेवी, राजनेता, पत्रकार और उनके परिजन–मित्र शामिल हुए।

१४ अगस्त, १९३२ को बीकानेर में जन्मे यशस्वी कथाकार यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' ने १३–१४ वर्ष की किशोरावस्था में ही लेखन कार्य आरंभ कर दिया था, जो उनके बीमार होने से पहले तक अनवरत जारी रहा। उन्होंने १२५ से अधिक विविध विधाओं में साहित्यक कृतियों का सृजन कर अपनी समर्थ लेखनी का लोहा मनवाया। उन्होंने ६० से अधिक औपन्यासिक कृतियों, लगभग २५ कहानी संग्रह, लगभग ५० बाल साहित्य पुस्तकों का भी सृजन किया। केन्द्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित चन्द्रजी ने सदैव लेखन को ही जीवन माना तथा फ्रीलांसर एवं स्वतंत्र लेखक के रूप में सृजनशील रहे। उन्होंने किसी तरह की कोई नौकरी नहीं की। उनके सृजन कर्म को पूरे देश ने स्वीकारा। उनके सृजन के विभिन्न पक्षों पर विभिन्न विश्वविद्यालयों में तीस से अधिक शोध एवं लघु शोध प्रबंध हुए हैं और हो रहे हैं।

चन्द्रजी के सृजनकर्म की प्रशंसा करते हुए शीर्षस्थ कथाकार कमलेश्वर ने कहा था, 'चन्द्र ने लगातार जीवंत राजस्थान को उत्कीर्ण किया है, इसलिए उनकी रचनाएं अपनी राजस्थानी पहचान के बावजूद आधुनिक भारत की रचनाएं है।' साहित्य मनीषी विष्णु प्रभाकर ने उनकी कहानियों के सम्बन्ध में कहा है कि चन्द्र के पात्र अपनी धरती से जुड़े हैं, कहानियां मात्र मन को छूती ही नहीं चिंतन के लिए भी विवश करती हैं। कथाकार राजेन्द्र यादव ने भी माना कि हिन्दी कथा साहित्य में 'चन्द्र', रेणु और शैलेश मटियानी ही ऐसे कथाकार है जिन्होंने अपने अंचलों की गंध से हिन्दी कथा को विशिष्टता प्रदान कर अपनी प्रतिभा एवं अपरिमित ऊर्जा के बल पर स्वीकृति प्राप्त की।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन श्री 'चन्द्र' के निधन पर शोक संतृप्त है एवं अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।◆

- सम्पादक, समाज विकास

न्यायमूर्ति लोढ़ा का निधन

जयपुर : न्यायिक क्षेत्र, लोक अदालत का क्रांतिकारी सूत्रपात करने वाले राजस्थान से पाली संसदीय क्षेत्र का तीन बार प्रतिनिधित्व कर चुके न्यायमूर्ति गुमानमल लोढ़ा का रविवार को अहमदाबाद में निधन हो गया। वह ८३ वर्ष के थे।

पारिवारिक सूत्रों के अनुसार न्यायमूर्ति लोढ़ा कुछ दिनों से अस्वस्थ थे। कल सुबह अहमदाबाद में ही उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा। उनके परिवार में पत्नी, दो पुत्र और एक पुत्री हैं। उनके बड़े पुत्र मंगल प्रभात लोढ़ा महाराष्ट्र में विधायक भी रहे हैं।

देश के जाने–माने न्यायविद और क्रांतिकारी फैसलों के लिए चर्चित रहे न्यायमूर्ति लोढ़ा का जन्म १५ मार्च १९२६ को नागौर जिले के डीडवाना कस्बे में हुआ। छात्र जीवन में उन्होंने श्री जयनारायण व्यास के नेतृत्व में लोक परिषद की गतिविधियों में भाग लिया तथा १९४७ में देश विभाजन के फलस्वरूप जोधपुर में आने वाले शरणार्थियों की दिन रात सेवा की। इसी समय आप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से सक्रिय रूप से जुड़े।

सम्मेलन गुमानमल लोढ़ा को उनके निधन पर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

प्रपत्र-४

समाचार पत्र पंजीयन केन्द्रीय कानून १४४६ (संशोधित) के आठवें नियम के साथ पढ़ी जाने वाली प्रेस तथा पुस्तक कानून की धारा १४डी उपधारा (बी) के अन्तर्गत समाज विकास (मासिक) कोलकाता, नामक समाचार पत्र से संबंधित तथा स्वामित्व एवं अन्य बातों का ब्यौरा :-

प्रकाशन का स्थान	: १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता -७०० ००७
प्रकाशन की अवधि	: मासिक
मुद्रक का नाम	: श्री भानीराम सुरेका
राष्ट्रीयता	: भारतीय
पता	: ८, कैमक स्ट्रीट, कोलकाता-१६
संपादक का नाम	: श्री नन्दकिशोर जालान
राष्ट्रीयता	: भारतीय
पता	: २६, अमहर्स्ट स्ट्रीट, कोलकाता-६
मालिक	: अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता -७०० ००७

मैं भानीराम सुरेका घोषित करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही है।

०७.०३.२००६ भानीराम सुरेका

प्रकाशक का हस्ताक्षर

S R RUNGTA GROUP

Caring for Land and People...

RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Exporters & Sponge Iron Manufacturer

- ***IRON ORE** – BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE** – BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***
- ***SPONGE IRON** – LUMPS & FINES*

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA - 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91-6582-256442
Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com; GRAM: "RUNGTA"

REGISTERED OFFICE

8A, EXPRESS TOWER, 42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA - 700017, INDIA
Phone: 033-2281 6580/3751; Fax: 91-33-2281 5380; Email: rungta_cal@sify.com

MINES DIVISION

RUNGTA OFFICE
MAIN ROAD, BARBIL - 758035, DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 275221/277481/ 441; Fax: 91-6767-276161
E-mail:rungta_bbl@yahoo.co.in , GRAM: "RUNGTA"

SPONGE IRON DIVISION

ORISSA
RUNGTA OFFICE
MAIN ROAD, BARBIL - 758035,
DIST- KEONJHAR, ORISSA INDIA
Ph: 06767- 276891/277391/021
TeleFax: 91-6767-277011

JHARKHAND
RUNGTA OFFICE
SADAR BAZAR, CHAIBASA – 833201
DIST – SINGHBHUM (W), JHARKHAND, INDIA
Ph: 06582-256621/256321
Fax: 91-6582-257521

REGISTERED Postal Registration
No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2007-09
Date of Publication - 28, April 2009
RNI Regd. No. 2868/68

wonder images

Leading solvent printing unit for outdoor & indoor ad.

- Crystal clear digital printing with vutek machine, on Flex, SAV, One way vision, UK Media, Mesh, Lamination, Canvas, etc.
- 40,000 sq ft per day production capacity.
- No compromise in quality.

Wonder images Pvt. Ltd.

2 Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph : 2225 1862/3/4/5, 9830425990, Fax : 91-33-2225 1866
email : wonder@cal2.vsnl.net.in

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : samajvikas@gmail.com

मूल्य : 10 रुपये प्रति
वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

अप्रैल २००९ ▸ वर्ष ५९ ▸ अंक ४

वार्षिक साधारण सभा संपन्न

दिनांक १९ अप्रैल २००९ को कोलकाता में

चित्र में: रा.कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोन्थलिया, रा. महामंत्री श्री राम अवतार पौद्दार, सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रूँगटा, पूर्व सभापति श्री मोहनलाल तुलस्यान, निवर्तमान सभापति श्री सीताराम शर्मा, रा. उपाध्यक्ष श्री हरि प्रसाद कानोडिया, रा.सं.महामंत्री द्वव श्री ओमप्रकाश पौद्दार व श्री संजय हरलालका

वार्षिक साधारण सभा में उपस्थित सदस्यगण

पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन की कार्यकारिणी सभा

अध्यक्षीय: मारवाड़ी समाज और मारवाड़ी सम्मेलन

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance instructions. And there are Companies that also finace dreams, aspirations and hopes. SREI, an Indian multinational, belongs to the latter. More than just financial products and services, SREI excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solution. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships".

SREI not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in human resource development and consistantly acknowledging the blessings of god makes SREI a proud recipient of the Willis Harman Spirit at Work Award.

At SREI, it's the vision of tomorrow that fuels our passion. Propelling us to see tomorrow. Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN.

SREI
INFRASTRUCTURE FINANCE LIMITED

Visit us at www.srei.com

ASSET FINANCING • INFRASTRUCTURE FINANCING • RENEWABLE ENERGY FINANCE • INVESTMENT BANKING • VENTURE CAPITAL • INSURANCE SERVICES

समाज विकास

अप्रैल २००९ ✦ वर्ष ५९ ✦ अंक ०४ ✦ एक प्रति-10 रु. ✦ वार्षिक-100 रु.

संपादक : नंदकिशोर जालान ✦ सहयोगी संपादक : शंभु चौधरी

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पृष्ठ संख्या
चिट्ठी आई है	४–५
अपनी बात	६–७
अध्यक्षीय	८
पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन की प्रथम प्रान्तीय सभा	९–१०
भ्रूण हत्या :	
बेटे रह जाए बिन ब्याहे, बहुएँ कहाँ से आएँगी–ओम लडिया	११
कन्या–भ्रूण हत्या रोकने का सरल इलाज – डॉ. श्यामसुन्दर भारती	१२–१३
नये सदस्यों की सूची	१४
गोयनका पब्लिक स्कूल	१९
लघुकथा : कौवा है.....	२१
चुटकुले	२१
कविताएँ:	
ब्याह को पंडाल	२२
जनता की बेबसी	२२
अपनी–अपनी किस्मत है ताऊ! – ताऊ शेखावाटी	२३
युगपथ चरण :	
राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति परिषद : रजत जयन्ती समारोह	२४
आदर्श कन्या शाला में वाटर कूलर की स्थापना	२५
राष्ट्रपति भवन में विभूतियों का सम्मान	२५
गणगौर गीतों का सीडी विमोचन	२६
रंग–रंगीलो राजस्थान	२७
राजस्थान दिवस	२८
कोलकाता मारवाड़ी महिला सम्मेलन	२९
बिहार : प्रदेश अध्यक्ष का अभिनन्दन	२९
मध्यप्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन : रामनवमी जुलूस का स्वागत	२९
श्रद्धाजंलि :	
यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	३०
न्यायमूर्ति गुमानमल लोढ़ा	३०

स्वत्वाधिकारी :

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ✦ १५२बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता–७००००७

फोन : ०३३–२२६८ ०३१९ ✦ E-mail :samajvikas@gmail.com

के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा ऐबल प्रिंटर्स प्रा.लि.

४५बी, राजाराम मोहन राय सरणी, कोलकाता–७००००९ में मुद्रित

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है

ज्योति विशेषांक पर कुछ और पत्र

समाज विकास के अक्टूबर अंक में रूपकुंवर ज्योतिप्रसाद अगरवाला के संबंध में विशेष सामग्री देखकर मुझे बहुत संतोष और प्रसन्नता हुई। आपने एक उत्कृष्ट व्यक्ति की अभ्यर्थना ही नहीं की है, उचित प्रकार का परिमार्जन भी किया है।

मैं स्वयं लम्बी अवधि के लिए असम की यात्रा पर गया था। वहां एक क्षेत्र में जितना ज्योति प्रसाद जी का आदर था, उतना ही कुछ लोगों में उनमें अलग रहने का आग्रह था। वे इस प्रकार से असमिया जीवन में घुल मिल गये थे कि उन्हें सम्मान किया जाना स्वीकार करना भी अनेक मारवाड़ियों को कठिन हो रहा था।

यह सही है कि जितनी प्रगाढ़ता से ज्योति प्रसाद जो असमियों के साथ समन्वित हो गये थे, उतना कम मारवड़ियों के लिए संभव है। परन्तु जो और जिस तरह का काम ज्योति प्रसाद ने किया। उसकी परम्परा परिपुष्ट करना असम के बाहर के लोगों के लिए भी संभव है। संभावना भर की बात वहीं है। जहां जीविकोपार्जन किया जाता है, उसके प्रति कुछ स्वाभाविक दायित्व बनते हैं। उनका निर्वाह इस तरह नहीं हो सकता कि जिस प्रदेश में रहो उसके जीवन से कटे–कटे रहो, वहां लाभार्जन करो, लेकिन वहां की संस्कृति से परहेज करो। मैंने स्वयं जो व्यवहार ज्योति प्रसाद जी की स्मृति के प्रति या उसकी अस्वाभाविकता का अनुभव किया था। दूसरी ओर, जिस प्रकार वहां के लोग ज्योति प्रसाद जी की पूजा सी करते हैं उसे भी मैंने देखा था। शिल्पी दिवस के एक आयोजन में उपस्थित था, जिसमें राज्य के मंत्री भी ज्योतिप्रसाद जी के चित्र को श्रद्धा से माल्यार्पण कर रहे थे।

असमिया व्यवहार की यह विशेषता है कि वहां के लोग उनके प्रति अपनत्व बढ़ा लेते हैं। जो उनके हो जाते हैं। जिनसे इसके विपरीत व्यवहार मिलता है, उनके प्रति प्रतिकूलता इतनी उग्र हो जाती है कि वह हिंसक रूप ले लेती है। समाज विकास के इस अंक में प्रकाशित सामग्री यह बटोरने के लिए पर्याप्त है कि ज्योति प्रसाद जी असम के हो गये थे, परन्तु वह इससे ज्यादा स्पष्ट है कि समस्त भारत उनके आदर की परिधि में था। व्यवहार ऐसा होना चाहिए जिसमें स्थानीयता और भारतीयता अलग–अलग नहीं, एक दूसरे में समाहित रहें। इसकी ज्योति को ज्योति प्रसाद जी ने जीवन पर्यंत प्रज्वलित रखा। जो व्यवहार अपने जीवन में ज्योति प्रसाद जी को असमियों से मिला वह आह्वान है, मर्यादा है, जिससे सद्भाव सारे देश में प्रसार प्राप्त कर सकता है।

मेरा श्री देवी प्रसाद जी से परिचय नहीं है। परन्तु मैं असम साहित्य सभा का महत्व जानता हूँ। उसकी आजीवन सदस्यता सचमुच विशिष्ट आदर का विषय होता है। अपनी तरह वे भी उचित आचरण के उदाहरण हैं। मैं समझता हूँ कि भारत भर में फैले मारवाड़ी इस अंक के प्रकाशन से ज्योति स्वरूप ज्योति प्रसाद जी का अधिक परिचय प्राप्त करेंगे, और उनका समस्त देश में उनके योग्य समादर होगा। तुलना करना अनुचित होगा, लेकिन ज्योति प्रसाद जी ने असम के पूज्य पुरुष शंकरदेव के कार्य को आगे बढ़ाया था। यह सबसे अधिक सम्मानप्रद है, आपने एक अभिनन्दनीय व्यक्तित्व का जो कीर्तिमान किया है।

- राजेन्द्र शंकर भट्ट
'स्फटिक', 3, जयाचार्य मार्ग,
राम निवास बाग, जयपुर-३०२००४ (राज.)
ई-मेल : stonetec@eth.net

समाज विकास का "ज्योति विशेषांक" अक्टूबर २००८ अंक मिला। अंक देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई, साथ ही समाज राष्ट्र के ज्योति पुरुष दिव्य ज्योति जो कि सरस्वती के वरद पुत्र लेखक कवि साहित्यकार नाटककार के जीवन परिचय प्राप्त कर मैं धन्य हुआ। एक व्यक्ति में एक साथ इतनी प्रतिभाएँ समाहित हो उसे तो सरस्वती पुत्र की संज्ञा देना वो मानना यथार्थ का प्रतीक है। जिनकी प्रतिभा को भारत सरकार ने मानते हुए डाक टिकट जारी किया एवं असम सरकार १७ जनवरी को शिल्पी दिवस मनाती है। ऐसे मारवाड़ी समाज की महान आभा को मेरा सत् सत् नमन।

समाज विकास पत्रिका के माध्यम से भूले बिसरे पूर्वजों की जानकारी आज की पीढ़ी को जगाने का सफल प्रयास है। अतः पूरे भारत के ऐसे व्यक्तियों के प्रसंग में जानकारी उपलब्ध कराना जारी रहना चाहिए। शाखाओं का फर्ज बनता है कि अपने क्षेत्र के ऐसे महान विभूतियों की जानकारी उपलब्ध करावे।

- नवरतन चुड़ीवाला
डी. पी. ढंढानियाँ लेन,
मारवाड़ी टोला, सुजागंज, भागलपुर-२
दूरभाष :०६४१-२४२०६४४(घर),०९३०४७२०४५६(मो.)

'ज्योति विशेषांक' समाज विकास भेजकर बड़ी कृपा की। जुलाई अंक भी अच्छा था। नया तेवर इस दफा असम के रविन्द्रनाथ ज्योतिप्रसाद अग्रवाल पर विशेष सामग्री देकर आपने स्तुत्य कार्य किया है। मुझे पता नहीं था, आप ऐसा शानदार अंक निकालेंगे, अन्यथा मैं भी एक आलोचनात्मक आलेख भेज देता। जनवरी अंक के लिए ज्योति प्रसाद पर एक लेख भेजूंगा। असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की एक ज्योतिप्रसाद की किताब भी मैंने संपादित की थी। असमावकाश में ज्योतिजी पर कई लेख लिखे थे।

- केसरीकान्त शर्मा 'केसरी'
आनन्दपुरा, वा.नं.१ मण्डावा-३३३७०४ राजस्थान

समाज विकास का अक्टूबर २००८ अंक आपका सराहनीय प्रयास हैं। यह अंक "ज्योति विशेषांक" पठनीय एवं संग्रहणीय है। आपने इस अंक में एक ऐसे महापुरुष पर प्रकाश डाला है जो अधिकांश लोगों की जानकारी में नहीं था। स्व. रूपकुंवर ज्योतिप्रसाद अगरवाला निसंदेह एक महान् विभूति थे जिन्होंने अपने अल्प जीवन में महान कार्य सम्पन्न किए। वास्तव में वे एक बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी थे वे सदैव ज्ञान की खोज में रहे। अपने छोटे से जीवन में कई ऊचाईयों को छूआ, विदेशों की यात्राएं की तथा साहित्य को भी समृद्धि प्रदान की। ऐसे महामानव संसार में कुछ देने के लिए ही अवतरित होते हैं तथा मानवजाति को बहुत कुछ देकर चले जाते हैं। मैं उस नाना प्रतिभाओं के धनी को सश्रद्धा नमन करता हूँ।

-रामनिरंजन शर्मा 'ठिमाऊ' पिलानी (राज.)

सही मूल्यांकन

समाज विकास का फरवरी २००९ का अंक प्राप्त हुआ। समाज एवं राष्ट्र कल्याण हेतु इस पत्रिका की एक अहम् भूमिका है। समाज में फैली बुराईयाँ कुरीतियों एवं अन्य विषयों का सही मुल्यांकन समय समय पर इस पत्रिका द्वारा निरन्तर किया जाता है। समाज को आने वाले भविष्य में निश्चित रूप से अपना मार्ग स्वयं प्रशस्त करना होगा।

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीतारामजी शर्मा द्वारा लिखा गया एवं वक्ता के रूप में ८ फरवरी को ज्ञान मंच, कोलकाता में आयोजित समारोह में जो विचार प्रगट किये गये वे शब्द अपने आपमें अद्वितीय हैं। समाज को दिशा निर्देश एवं मार्ग प्रदर्शन का जो सच्चा रूप बताया गया है उसके कुछ अंश आपको लिख रहा हूँ।

समाज शिक्षित हुआ है, लेकिन सुधार बाकी है। मारवाड़ी समाज अपनी जिन सुविधाओं के लिये जाना जाता रहा है, उन्हें खो रहा है। संचय की प्रवृति का ह्रास हुआ है एवं झूठा दिखावा एवं प्रदर्शन बढ़ रहा है। ईमानदारी में कमी आयी है। टूटते परिवार परिवारिक अनुशासन का अभाव,बढ़ते तलाक,टूटते विवाह,बड़ों के प्रति सम्मान में लगातार कमी हमारे सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों में लगातार कमी आयी है। कुछ दशकों पहले तक समाज का धनिक वर्ग सामाजिक कार्यों में पूरा भाग लेता था, समाज को दिशा निर्देश प्रदान करता था, पंचायत के माध्यम से विवादों का निपटारा करता था एवं अनुचित सामाजिक कार्यों के लिये दंड भी देता था। पंचायत का भय था, समाज का डर था। परन्तु आज इस दिशा में धनिक वर्ग उदासीन है।

श्रद्धेय शर्माजी के द्वारा दिये गये इन विचारों को 'समाज विकास' पत्रिका द्वारा एक प्रमुख विषय मानकर इस पर गहन रूप से विचार करना चाहिए। हम वर्तमान अध्यक्ष श्री रूंगटाजी से भी नम्र निवेदन करेंगे कि अपने कार्यकाल में इस अलौकिक विषय पर गहन विचार करें एवं आने वाले भविष्य में इन कमियों को कैसे दूर किया जा सके उसका विचार करने की कृपा करें।

- सत्यनारायण तुलस्यान, मुजफ्फरपुर (बिहार)

बहुत काम बाकी है

यह जानकर अति हर्ष हुआ कि आपने होली के पावन पर्व पर 'समाज विकास' में 'बुरा न मानो होली है' स्तम्भ के अन्तर्गत मुझे नायाब तोहफा दिया है "बहुत काम बाकी है"

सचमुच इस तोहफे से मेरी मनोकामना पूर्ण होगी, अब मैं चाहता हूँ कि हर महीने लगातार ६ महीनों तक 'समाज विकास' में मेरे दो काम जो होने बाकी हैं प्रकाशित करें तभी पाठक उनपर विचार कर सही कदम बढ़ाए जिससे समाज का भला हो।

क्या काम बाकी है पढ़ें और जाने
सोच समझ कर सही कदम बढ़ाएँ

आप सभी मारवाड़ी बन्धुओं ने सन २००७ और २००८ के अंकों में वैवाहिक आचार संहिता जरूर पढ़ी होगी जिसमें शुरू में लिखा है "मिलनी सबकी ४ रुपया चांदी छोड़ कागज का रुपया" पर खेद है कि भारत सरकार ने एक रुपये के कागज के नोट छापने बंद कर दिये हैं। ऐसी स्थिति में सम्मेलन भी आचार संहिता में संशोधन कर यह लिखना चाहिए कि मिलनी सबकी ४ रुपया चांदी छोड़ धातु का रुपया।

- डॉ अरुण भारती,
२११, पी.एन.मालीया रोड
रानीगंज - ७१३३४७
ई-मेल - arunarun2@gmail.com

राजस्थानी मायड़ भाषा फेर मानता क्योंनी पावें....

मिश्री जेड़ी बोली मिठी, बोल्यां जीव घणों सुख पावे।
राजस्थानी मायड़ भाषा, फेर मानता क्योंनी पावें?

इंणरी लिपि मुड़िया स्यूं, अणजांण मिनख नी है, कोई।
इण स्यूं ही आधुनिक लिपि, ईबनागरी री मैहता होई।
शब्दकोष ईण रो लूठौ, आखो जग इणने चावे।
मातृ भाषा हिन्दी री, शब्दां री बिचलि लगल कहावे।
इतिहास घणों ईण रो जूनो, चितराम भड्योड़ा मिल जावे।। १।।
राजस्थानी मायड़ भाषा, फेर मानता कयोंनी पावे?

मेवाड़ी, इठाडी, माळवी, कठै हडोती बोली जावे।
मारवाड़ी, ब्रज, बागड़ी, अर मिली इण रा भंग कहावे।
सगळा अंगा र भळप क्यूं, आ राजस्थानी नाम कहावे।
डिंगळ पिंगळ शैली स्यूं इण कलम चितेश छंद बणावे।
बाई मिरां रा मिण पद, धर–धर म्हारी बोल्या जावे।। २।।
राजस्थानी मायड़ भाषा, फेर मानता कयोंनी पावे?

मूरत बिना मन्दिर सुनो, ज्यूं जीव बिना धरती सुनशान।
बिन बाति दीवलो सुनो, बिन मायड़ भाषा राजस्थान।
मायड़ भाषा र खातिर, इण र जाया ने जंगणो पड़सी।
नी मिले मानता जद मांग्यो, लोही म्हं जोश भरणों पड़सी।
इबर मिनख रो जद टूटे, वो मारग दूजो अपणावे।। ३।।
राजस्थानी मायड़ भाषा, फेर मानता कयोंनी पावे?

अब देखी इण री करणे सो परिणाम बणों खोटो (कोजो) होशी।
आंदोलन री आग री लपटां स्यूं, बचणो घणों भोखो होशी।
राजगद्दी पर बैठणीयां ने आपां सबक सिखावोला।
मायड़ भाषा ने सागळा मिल, ठावी ठोड़, पुगावाला।
ईणरी आत्मा गरी पड़ी, ईणरनी कदी समझ आले।। ४।।
राजस्थानी मायड़ भाषा, फेर मानता कयोंनी पावे?

धोया बादळ कदै नी बरसे, फण धर नी प्रित निभावै है।
अरदास करणीयां ने अ, शासनकर्ता, झूठा काच दिखावे है।
जद चाहिज्यै वोट इणा ने, पगां उगाणा आज्यावे।
वैशेर तरमा गरजणवाकाँ, भोळी भेड़ा ज्यूं बणज्यावें।
'राजू' राजस्थानी लिक्ष्मण, अनि मूंठो पडूयो निजरेजी आवे।। ५।।
राजस्थानी मायड़ भाषा, फेर मानता कयोंनी पावे?

- राजू पारीक "उषाणी"
श्री तोलाराम दानाराम पान्डिया
मु.पो.पूलासर-३३१४०२, जिला : चूरू (राजस्थान)
मोबाइल : ९९५७२०५२८८

महाजनी मोड़िया लिपिः

खोती जा रही हमारी राजस्थानी विरासत

अपनी बातः

राजस्थानी संस्कृति भी लुप्त हो जायेगी

विश्व के किसी भी समाज को हम लें, साहित्य से ही उस समाज की संस्कृति – समृद्धि का पता चलता है और बिन भाषा, साहित्य लिखा नहीं जा सकता। भाषा का आधार भले ही किसी भी लिपि में क्यों न हो, उसमें भरे हुए शब्दों का भंडार ही उस समाज की संस्कृति को बचाये रखने में समर्थ हो सकता है। किसी भी समाज की दशा का आकलन वहाँ के साहित्य को देख–पढ़ के ही किया जा सकता है। किन्तु जो समाज यह मानता है कि साहित्य से नाता तोड़कर वह बेहतर जिंदगी जी लेगा तो यह सोचना एक आत्मघाती सोच है। प्रवासी मारवाड़ी समाज की स्थिति कुछ इसी प्रकार की हो चुकी है। साहित्य में भी धन की खोज करना गलत नहीं है परन्तु साहित्य को अपनाने की जगह साहित्य की दुकानदारी करने वाले इस समाज को यही कहा जा सकता है कि वे इस तरह के कार्य न करें जिससे साहित्य सेवा के नाम पर व्यवसाय करने की बू आने लगे।

देश के समाचार केन्द्र में मारवाड़ी समाज की महत्वपूर्ण भूमिका होते हुए भी हर तरह से समृद्ध राजस्थानी भाषा आज दम तोड़ती नजर आ रही है। राजस्थान से निकलने वाली 'माणक', और कोलकाता से प्रकाशित होने वाली 'नैणसी' पत्रिका ने राजस्थानी भाषा को जिन्दा न रखा होता तो शायद रही–सही भाषा भी लुप्त हो जाती। आज सारे देश में राजस्थानी भाषा की अलख जगाने वाले स्व. कन्हैयालालजी सेठिया नहीं रहे, परन्तु इनके गीत ने जिस तरह से राजस्थानी भाषा का प्रचार घर–घर में किया यह हम सभी के लिये गर्व की बात है।

हम जब राजस्थानी भाषा की बात करते हैं तो राजस्थान प्रान्त की ही कई बोलियां इसके संवैधानिक मान्यता में अड़चनें डालती नजर आती है। भारत के अन्य राज्यों की तरह राजस्थान में भी कई बोलियाँ बोली जाती हैं। जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने राजस्थानी बोलियों के पारस्परिक संयोग एवं सम्बन्धों के विषय में लिखा तथा वर्गीकरण किया है। जो इस प्रकार है :–

◆पश्चिमी राजस्थान में बोली जाने वाली बोलियाँ – मारवाड़ी, मेवाड़ी, ढारकी, बीकानेरी, बाँगड़ी, शेखावटी, खेराड़ी, मोड़वाडी, देवड़ावाटी आदि।

◆उत्तर–पूर्वी राजस्थानी बोलियाँ – अहीरवाटी और मेवाती।

◆मध्य–पूर्वी राजस्थानी बोलियाँ – ढूँढाड़ी, तोरावाटी, जैपुरी, काटेड़ा, राजावाटी, अजमेरी, किशनगढ़, नागर चोल, हड़ौती।

◆दक्षिण–पूर्वी राजस्थान – रांगड़ी और सोंधवाड़ी

◆दक्षिण राजस्थानी बोलियाँ – निमाड़ी आदि।

यह समस्या नई समस्या नहीं है, असमिया भाषा के साथ भी कुछ इसी प्रकार की घटना घट चुकी है। १८३६ई. में असम में सरकारी भाषा के रूप में बंगला भाषा को लागू कर दिया गया था। कारण और तर्क यह था कि असमिया बोली में बंगला शब्दों का प्रयोग अधिक है। जबकी असमिया भाषा बिलकुल भिन्न थी। उस समय ब्रनसन–ब्राउन ने असमिया शब्दकोष तैयार कर यह साबित कर दिया था कि असमिया बोली नहीं बल्कि एक अलग भाषा है, जिसके हजारों शब्दों के अर्थ बंगला भाषा से अलग हैं। ठीक इसी प्रकार राजस्थानी भाषा के शब्दकोष पर नजर डालें तो हम इसके शब्द भंडार को देख कर दंग रह जाते हैं कि हिन्दी और संस्कृत में भी जिस बात को कहने के लिये शब्द खोजना पड़ता है वहीं राजस्थानी भाषा में एक बात को कहने के लिये कई–कई शब्द उपलब्ध हैं। आप अंग्रेजी और लैटिन भाषा का उदाहरण देखें इसमें एक जैसे शब्द रहते हुए भी दोनों अलग–अलग भाषा के रूप में प्रचलित है। राजस्थानी भाषा के मान्यता को लेकर राजस्थान में ही विवाद होना एक दुर्भाग्य का विषय है। इसका जल्द से जल्द समाधान खोजना ही होगा। अन्यथा हमारी राजस्थानी संस्कृति भी लुप्त हो जायेगी।

-शम्भु चौधरी

अध्यक्षीय

मारवाड़ी समाज और मारवाड़ी सम्मेलन

- नन्दलाल रूँगटा -

सम्मेलन अपने ७५वें वर्ष की तरफ अग्रसर हो रहा है। सम्मेलन की नींव रखने के पीछे उद्देश्य समाज को एक सूत्र से जोड़ना रहा, जिसकी जरूरत हमें कल भी थी और आज भी जस की तस बनी हुई है। हाँ ! उस समय समाज की जो जरूरतें थीं, उसमें काफी परिवर्तन आया है। जहाँ एक तरफ समाज रूढ़िवादी परम्पराओं से अलग हटकर सोचने लगा वहीं समाज में दिखावा, आडम्बर ने अपनी जगह बना ली है। समाज ने शिक्षा में प्रगति की है तो उद्योग के क्षेत्र में क्रमशः पिछड़ता जा रहा है। परम्परागत कारोबार से नई पीढ़ी नाता तोड़ती जा रही है। पूर्वजों द्वारा स्थापित समाजसेवा के कई संस्थाओं में नई ऊर्जा को या तो नजरअंदाज किया जाता रहा है या वर्तमान संदर्भ में संस्था रूचिकर न होने से नई ऊर्जा ऐसी संस्थाओं से नहीं जुड़ पाती है। धीरे-धीरे क्लब संस्कृति, समाज की संस्कृति बनती जा रही है। इन सबके रहते हुए भी समाज को एक संगठन की जरूरत महसूस होती रहती है। समय-असमय समाज को कई प्रान्तों में सामाजिक/राजनैतिक संकटों का सामना करना पड़ता है। स्थानीय प्रशासन या राजनैतिक दल ऐसे समय में समाज को साथ देते दिखाई नहीं देते। इसके मूल में हमारे समाज का असंगठित होना एक मात्र कारण है। जहाँ थोड़ा बहुत संगठन है वहाँ किसी तरह से समाज अपनी सुरक्षा कर पाता है परन्तु इस सुरक्षा के बदले समाज को भारी कीमत चुकानी पड़ती है।

सम्मेलन के ७४ साल के इतिहास का आंकलन करने से हमें चौंकाने वाले तथ्य सामने मिलते हैं, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि सम्मेलन वह सब कर रहा है जो हम सोच भी नहीं सकते। सम्मेलन ने समाज को न सिर्फ सुरक्षा प्रदान की, एक समय जब समाज को उसके वोट से वंचित किया जा रहा था तो सम्मेलन के बैनर के तले ही हमें अपने हक की लड़ाई लड़नी पड़ी थी। यह सही है कि सम्मेलन एक ऐसी संस्था है, जिसमें अन्य संस्थाओं की तरह मनोरंजन के कार्यक्रम नहीं लिये जाते, न ही किसी क्लब की तरह इस संस्था में कोई 'खाने-पीने' की किटी पार्टी का आयोजन ही किया जाता है। शायद कई बार कुछ लोग इस संस्था पर ये आरोप लगाते नजर आते हैं कि सम्मेलन सिर्फ "आये का स्वागत - गये की विदाई" आयोजन करने की संस्था बन कर रह गई है, जो कि बिलकुल गलत है। जबकि वास्तविकता यह है कि सम्मेलन ही एक मात्र ऐसी संस्था है जो देश भर में मारवाड़ी समाज का प्रतिनिधित्व कर पाने में सक्षम है।

सम्मेलन की आज १२ प्रान्तों में शाखायें हैं, इसके निर्णय से मारवाड़ी समाज बहुत हद तक प्रभावित होता रहा है। असम के गांव से लेकर बिहार, बंगाल, झारखण्ड, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्कल, मध्यप्रदेश, दिल्ली, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, तामिलनाडू प्रान्तों में सम्मेलन के कार्यकर्ता कार्य कर रहें हैं। समाज के सैकड़ों लोगों ने अपने जीवन के कीमती क्षण समाज को संगठित करने में लगा दिये। हम चाहते हैं कि इस पूँजी को और मजबूत आधार प्रदान किया जाय। समाज को सम्मेलन के उद्देश्यों से भली भाँति परिचित कराया जाय कि अन्य संगठनों से सम्मेलन भिन्न कैसे और सम्मेलन द्वारा लिये गये निर्णय समाज के लिये कितने कारगर हैं।

सम्मेलन का कार्य समाज हित में व्यापक है इसे और व्यापक बनाने के लिये सम्मेलन को न सिर्फ प्रान्तीय स्तर पर, बल्कि सम्मेलन की शाखाओं को हर गाँव तथा शहर में और अधिक संगठित करने पर भी हमें अधिक ध्यान देने की जरूरत है। हमारी चेष्टा रहनी चाहिये कि समाज के प्रत्येक मारवाड़ी परिवार से कम से कम एक सदस्य सम्मेलन का साधारण, आजीवन या संरक्षक सदस्य जरूर से बने। यह बात सभी जानते हैं कि किसी भी जातिगत संस्थाओं का विकल्प संभव है, परन्तु मारवाड़ी सम्मेलन का विकल्प खोजना समाज को कमजोर करना है। आईये, समाज के इस संगठन को हर स्तर पर और अधिक मजबूत करने में अपना योगदान देवें। ◆

पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन
की प्रथम प्रान्तीय सभा

बाएं से श्री ओमप्रकाश चौधरी (महामंत्री) श्री विजय मंगलनीया (निवर्तमान अध्यक्ष), डॉ. श्यामसुन्दर हरलालका (खड़े अवस्था मै) प्रान्तीय अध्यक्ष, श्री कैलाश कावरा (शाखा उपाध्यक्ष)

पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन की प्रथम प्रान्तीय कार्यकारिणी की बैठक दिनांक ८ फरवरी २००९ को गुवाहाटी में हौर्नबिल होटल में आयोजित हुई जिसमें नव निर्वाचित अध्यक्ष डॉ. श्यामसुन्दर हरलालका को गुवाहाटी शाखा ने असमिया रीति–रिवाज के अनुसार फुलम गामोछा तथा झापी पहनाकर स्वागत किया गया। प्रान्तीय कार्यकारिणी में नये पदों की घोषणा की गई, जो निम्न प्रकार है –

महामंत्री – श्री ओमप्रकाश चौधरी

उपाध्यक्ष – श्री कैलाश लोहिया, श्री शिव भगवान शर्मा, श्री अशोक कुमार धानुका गुवाहाटी, डॉ. कमल कुमार झुनझुनवाला शिलाँग, श्री अशोक अग्रवाला तिनसुकिया, श्री कृष्ण नारायण अग्रवाला ईम्फाल, श्री ओमप्रकाश गट्टानी जोरहाट

संयुक्त मंत्री – श्री सज्जन कुमार अग्रवाला, श्री दिलिप कुमार सराफ, गुवाहाटी,

संगठन मंत्री – श्री बजरंग लाल अग्रवाला, नगवाँ

सहायक मंत्री – श्री के आर चौधरी, श्री किशनलाल बिदासरिया

पूर्वोत्तर में वर्तमान ५२ शाखा कार्यरत हैं तथा २२ नई शाखा खोलने का निर्णय लिया गया। संशोधित संविधान का प्रारूप भी कार्यकारिणी के विचारार्थ रखा गया। इस वर्ष के अन्त में गुवाहाटी शाखा के आतिथ्य में त्रयोदश अधिवेशन आयोजित करने का निर्णय लिया गया है।

पूर्वोत्तर प्रदेश के विभिन्न स्थानों से कार्यकारिणी सदस्य तथा विशेष आमंत्रित सदस्यों ने आकर इस सभा में भाग लिए। इस सत्र के लिए कुछ अहम् मुद्दों पर विस्तार से विचार विमर्श हुआ तथा सम्मेलन व समाज को मजबूत करने के लिए कुछ विशेष योजनाओं पर प्रथम वर्ष में प्राथमिकता के साथ क्रियान्वित करने का निर्णय लिया गया। योजना के मुद्दे निम्न प्रकार के हैं :–

जनगणना : मानव अपने देश, राष्ट्र और समाज के लिए एक बड़ी ताकत है। लोकतंत्र की आधारशिला ''संख्या'' की बेदी पर निर्भरशील है। समाज का राजनैतिक भविष्य इसी के आधार पर तय होता है। पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन करीब दो सौ वर्षों से पूर्वोत्तर के क्षेत्र को अपनी कर्मभूमि मानकर इसमें रच बस गया है। इस लम्बी यात्रा के दौरान अनगिनत तूफानों को झेलना पड़ा है फिर भी निश्चयता के साथ अपने मानव अधिकारों को

आज भी प्राप्त करने में अक्षम है। कहते हैं, पूर्वोत्तर में हमारी संख्या लाखों में है मगर इसे प्रामाणिक रूप से कहना कठिन है। सम्मेलन के विभिन्न अवसरों पर हुए अधिवेशन में समाज की जनगणना करवाने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से लिया गया, प्रयास भी हुए परन्तु सफलता हाथ नहीं लगी। हमें अपनी ताकत का ज्ञान होना आवश्यक है। संगठन की दृष्टिकोण से भी इस प्रकार की गणना का होना व प्रकाशित करना नितान्त आवश्यक है। आज की सभा यह निर्णय लेती है कि अति–शीघ्र जनगणना का कार्य–सम्पादन करने के लिए सक्रिय कदम उठाने की पहल करें। सभी शाखा सभा को निश्चित समय अवधि के भीतर यह कार्य–सम्पादन करके पूर्ण प्रतिवेदन प्रांतीय कार्यालय को उपलब्ध करवाये। प्रांतीय कार्यालय प्रकाशित करने का पूर्ण भार अपने उपर लेती है। जनगणना की रूपरेखा निम्न प्रकार होगी (एक प्रारूप संलग्न)। जिन स्थानों पर शाखा नहीं है उन स्थानों पर निकटतम शाखा को यह कार्य निश्चित समय सीमा में निष्पादित करना है। जनगणना के कार्य–सम्पादन में दैनिक हिन्दी पत्रिकाओं को सक्रिय भूमिका निभाने के लिए अह्वान करती है।

समाजकीर्ति : दानशीलता मारवाड़ी समाज का संस्कारों से मिला हुआ नैसर्गिक गुण है जिसका लोहा सभी जातियाँ मानती हैं। मानव कल्याण के हित में अनगिनत शिक्षण संस्था, अस्पताल, धर्मशाला, मंदिर, गौशाला, बावड़ी, अतिथिगृह व अन्यन्य संस्थाओं का निर्माण, संचालन व अभिवृद्धि इस समाज के धन से हुई है। इस जाति की दानशीलता की मिसाल अन्यत्र नहीं मिल सकती हैं। बहुत से अनुष्ठान समाज के अन्तर्गत नहीं है मगर वे समाज के द्वारा प्रदत्त धन, भूमि व अन्य सेवा के कारण अस्तित्व में आए हैं मगर काल क्रम में आनेवाली पीढ़ी नहीं जान पाएगी। यह वर्षो से अनुभव किया जा रहा है कि हमारी देन सभी उपलब्धियाँ व समाज कीर्ति का आंकलन व मूल्यांकन करने के लिए तथा दूसरे समाज को सकारात्मक संदेश पहुचाँने के लिए इनका प्रमाणिक संकलन शाखाओं की सहायता से तैयार किया जाए जिसे बाद में अंग्रेजी व असमिया में प्रकाशित करने की योजना है। यह कार्य भी एक समय सीमा के अन्तर्गत क्रियान्वित करने का ठोस कदम उठाने का निर्णय लेती है। प्रकाशन का सम्पूर्ण कार्य प्रांतीय स्तर पर किया जाएगा। इसकी भी प्रविष्टियों को शाखा द्वारा अनुमोदित होना आवश्यक है।

समाज गौरव : समाज की पहचान व्यक्तियों से होती हैं। उच्च कोटि के चरित्रवान, नि:स्वार्थ, संवेदनशील, निर्भीक, बुद्धिजीवी, दानशील, जागरूक चिन्तनशील व्यक्ति कभी–कभी हमारे बीच मार्ग दर्शन करने के लिए आते हैं उन व्यक्तियों का आंकलन कर समाज में उचित स्थान देने पर समाज में आनेवाली पीढ़ी को नई ऊर्जा, प्रेरणा, मार्गदर्शन मिलेगा व समाज के लिए कुछ करने की ललक व चाहत बढ़ेगी। जिस समाज में ऐसे व्यक्तियों का अभाव है वह समाज दीन है, दु:खी है, निर्धन है। एक ज्योतिप्रसाद अग्रवाला एक जाति के लिए युग पुरुष बन गया एवं वह जाति उस पर गौरव करती है।

समाज के हित में बहुतों ने अपने ''आज'' को कुर्बान कर आनेवाली पीढ़ी के ''कल'' को सुरक्षित करने के लिए त्याग किया है। हम पूर्वोत्तर के सभी स्थानों से उन व्यक्तियों के बारे में अधिक से अधिक प्रमाणिक जानकारी करके ''समाज गौरव'' नामक पुस्तिका में प्रकाशित करें। प्रविष्टियाँ शाखा सभाओं के सुझाव पर ही प्रकाशन के लिए ''उच्च स्तरीय केन्द्रीय सम्पादक मंडली'' को प्रेषित की जाएँगी जिसे अन्तिम निर्णय लेने का अधिकार होगा। प्रविष्टियों के लिए एक मापदंड अपनाया जाएगा। इसमें समाजसेवी, बुद्धिजीवी, साहित्यिक, किसी भी प्राप्त शिखर दक्षता वाले व्यक्तियों को स्थान दिया जायेगा। जो हमारे बीच नहीं हैं एवं जो आज मौजूद हैं उन सभी को ''समाज गौरव'' में गौरवान्वित होने का अवसर दिया जाएगा। इस प्रकाशन को असमिया तथा अंग्रेजी भाषा में भी प्रकाशित किया जाएगा।

वैवाहिक प्रकोष्ठ : प्रवासी मरवाड़ी समाज की आबादी प्रान्त में दिनों दिन बढ़ती जा रही है। नारी शिक्षा के प्रचार–प्रसार से नारी शक्ति जागरण का उद्घोष हुआ है। संयुक्त परिवार की अवधारणा अंतिम सांसें ले रही है। उच्च शिक्षा रोजगार की कुंजी बनती जा रही है। समाज का एक वर्ग रोजगार के तालाश में उच्च शिक्षा के प्रति उन्मुख हो रहा है। शादी करने की उम्र सीमा का अधिक बढ़ जाना स्वभाविक प्रक्रिया है। बेमेल शादियाँ, अन्तर्जातीय शादियाँ, आवश्यक जानकारी के अभाव में होनेवाली शादियाँ भी काफी संख्या में हो रही है। फलत: यह बन्धन तेजी से टूटकर परित्यक्ताओं की संख्या में बहुत वृद्धि हुई है जो समाज के लिए एक अहम् प्रश्न है। इसकी रोकथाम करने के उपायों का अवलंबन आवश्यक है।

समाज में शादी विवाह के योग्य वर–वधु के चयन या परिचय इत्यादि की कोई व्यवस्था न होना घातक माना गया है। स्वस्थ समाज के लिए इस व्यवस्था को सर्वमान्य स्वरूप देना आवश्यक है जिसके अन्तर्गत उपर्युक्त युवक–युवतियों की सूचना का आदान–प्रदान व परिचय सम्मेलन आदि के लिए वातावरण तैयार करके एक ठोस ढाँचा तैयार किया जा सके व इस प्रकार की कार्य योजना शाखा द्वारा क्रियान्वयन करने के लिए सभी शाखाओं में विवाह प्रकोष्ठ की स्थापना करने का निर्णय लेती है। इस प्रकोष्ठ के द्वारा ही शादी विवाह में दिखावा, आडम्बर आदि पर अंकुश लगाना या विवाह संबंधी अन्यन्य सुधार के काम किये जाएँगे।

बुद्धिजीवी प्रकोष्ठ : मारवाड़ी समाज में गत चार दशक से शिक्षा के प्रति जागरूकता व रूझान में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। अग्रवाल समाज को भारतवर्ष में सर्वाधिक शिक्षित समाज होने का इन्डिया टुडे ने दावा किया है। एक वर्ग ने उच्च शिक्षा प्राप्त करके जीविका उपार्जन का साधन बनाया है। इस क्षेत्र में भी इन्हें बहुत बड़ी सफलता मिली है। इन्होंने अपने क्षेत्र में देश व विदेश में नये–नये किर्तिमान स्थापित किये हैं।

मारवाड़ी समाज में वकील, इंजीनियर, पत्रकार, कलाकार, चार्टड एकाउन्टेन्ट, डाक्टर, प्रोफेसर, आर्किटेक्ट, न्यायाधीश, साहित्यकार, आईएएस, आईपीएस आदि बहुत बड़ी संख्या में हैं। ये समाज का एक शक्तिशाली वर्ग है मगर समाज के प्रति उदासीन हैं। कारण विभिन्न हो सकते हैं। इस वर्ग को छोड़कर समाज को प्रगति के मार्ग पर ले जाना कठिन है। इस वर्ग को सम्मेलन के साथ जोड़ना अनिवार्य है। सर्वप्रथम इसके आंकलन के लिए इनकी गणना करके इनकी पूर्ण जानकारी के साथ फोटो सहित निर्देशिका प्रकाशित करने का निर्णय लेती है। इस वर्ग की सम्मेलन के उद्देश्यों में अहम् भूमिका निभाने का मार्ग प्रशस्त करना होगा। सभी शाखाओं से अनुरोध किया जाता है कि वे भी एक बुद्धिजीवी प्रकोष्ठ की स्थापना करे व उनके बारे में पूर्ण जानकारी केन्द्रीय कार्यालय को शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का काम पूर्ण करें। सम्मेलन बुद्धिजीवी वर्ग को सम्मेलन की गतिविधियों में एक अहम् भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करता है।◆

बेटे रह जाए बिन व्याहे, बहुएँ कहाँ से आएँगी

-ओम लडिया

कन्या भ्रूण हत्या एक मजबूरी है चाहत नहीं, इस विषय पर हमको आपको और समाज को अध्ययन व गहन चिन्तन करना होगा। सिर्फ कानून बना देना इस समस्या का समाधान नहीं।

कन्या भ्रूण हत्या का प्रमुख कारण दहेज रूपी दानव है। कन्या जन्म लेते ही माता–पिता के जेहन में दहेज एक भय के रूप में समा जाता है। नवजात कन्या पैदा होते ही माता–पिता पर एक भार–बोझ बन जाती है। अतः मजबूरन वे गर्भावस्था में ही शिशु का लिंग जान लेना चाहते हैं। चन्द रुपयों के लालच में डाक्टर, प्राइवेट नर्सिंग होम में अजन्में शिशु कन्या की हत्या कर देते हैं एवं भ्रूण हत्या का सिलसिला गैर कानूनन चलता रहता है। यह एक कड़वा सत्य है कि हम आदर्श मानवता भाईचारा की बात करते है। कन्या भ्रूण हत्या बन्द करने को कहते है। दहेज प्रथा समाप्त करने को कहते हैं लेकिन स्वयं (वास्तविकता) में इन बातों की धज्जियाँ उड़ाकर बदल जाते है। इसका पहल करें, शुरूआत करें, स्वयं आचरण करें। घर में अपनी पुत्री को तो सम्मान दिया जाता है परन्तु पुत्र–बधु को सम्मानित रूप से स्वीकार नहीं किया जाता और उनके साथ भेद भाव किया जाता है। कन्या भ्रूण हत्या को हर व्यक्ति, प्रत्येक संगठन तथा समाज मिलकर मूल से उखाड़ फेकने का संकल्प लें। पुरुष प्रधान समाज अपने आचरण में बदलाव लाए ताकि माता–पिता कन्या उत्पत्ति से ना हिचकिचाएँ तथा खुशी–खुशी कन्या जन्म देकर समाज, धर्म, देश तथा सृष्टि की उत्पत्ति में सहायक हो।

कन्या भ्रूण हत्या रोकना है तो दहेज पर रोक लगाना जरूरी है। पुत्र के माता पिता को दृढ़ संकल्प लेना होगा कि वे अपने पुत्र का विवाह बिना दहेज के ही करेंगे। जो ऐसा नहीं करते उनको कन्या भ्रूण हत्या विरोध करने का कोई अधिकार नहीं है। इतना ही नहीं, बल्कि उनको कन्या भ्रूण हत्या का दोषी मानना चाहिए। जिन दम्पत्ति को केवल पुत्र ही है वे भी एक कन्या गोद लेकर सहर्ष उसका लालन–पालन तथा यथा शिक्षा देकर उस कन्या का विवाह कर कन्यादान महाकल्याण का लाभ उठाए।

इसका अन्य कारण है प्रथम कन्या सन्तान होते हुए दूसरी बार गर्भाधान करना। एक नवदम्पति प्रथम सन्तान पुत्र या पुत्री पर ज्यादा चिंतित नहीं होते परन्तु दूसरी बार में पूर्ण सर्त्तकता बरतना चाहते हैं। दूसरी सन्तान यदि कन्या ही जन्म लेने की संभावना हो तो वे इसका विनाश जरूर करवाना चाहेंगे। अतः जरूरत है सामाजिक सुरक्षा की, महिला संगठन इस दिशा में संलग्न होकर सकारात्मक कार्य कर सकती है, गर्भस्थ कन्या शिशु को गोद लेने में सहयोग प्रदान कर सकती है एवं कन्या भ्रूण हत्या न हो, इसके लिए दम्पति को Counselling कर सकती है। इसके अलावा एक तरह का Insurance (बीमा) भी शुरू किया जा सकता है जिसके तहत गर्भस्थ स्थिति में ही कन्या जन्म के पक्ष में पाँच से दस लाख रुपया तक की Insurance (बीमा) करवाई जा सकती है। यह सुविधा सिर्फ दूसरी कन्या सन्तान को ही उपलब्ध हो और इसके लिए एक Premium राशि तय की जा सकती है। उपरोक्त राशि कन्या के नाम पर Fixed Deposit के रूप में जमा की जा सकती है जो राशि सिर्फ कन्या को ही बालिग होने पर प्राप्त कराई जायेगी। हाँ इस Fixed Deposit से प्राप्त मासिक ब्याज से माता–पिता उस कन्या का लालन–पालन, भरण–पोषण, शिक्षा आदि का खर्च वहन कर पायेंगे।

कन्या भ्रूण हत्या रोकने में Lady Doctors काफी सहायक सिद्ध हो सकती है जिनके लिए गर्भवती महिलाओं का Record रखना आवश्यक होगा और दूसरी बार गर्भवती महिलाओं की पूर्ण जानकारी महिला संगठनों एवं सरकार को देना अनिवार्य होगा। इस विषय में कानून बनाया जा सकता है। ये Lady Doctors कन्या भ्रूण हत्या रोकने में गर्भवती महिलाओं को सलाह मशविरा देकर प्रेरणास्पद भूमिका निभा सकती है तथा इस सम्बन्ध में उपलब्ध सरकारी सहयोग या सहायता, Insurance (बीमा) आदि, और गोद (देना) की पूर्ण जानकारी दे सकती हैं।

कन्या (पुत्रवत) : कन्या शिशु को सशक्त बनाना होगा। अन्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के साथ उसे घर परिवार क्षेत्र में भी आगे आना होगा। अपने माता पिता को पुत्र की कमी न खले इसके लिए पुत्रवत जिम्मेदारी वहन करनी होगी। वे असुरक्षित महसूस न करें और उनकी देख–भाल में कोई कमी न हो ऐसा पूरा ख्याल रखना होगा। समाज कन्याओं को अन्तिम संस्कार करने की अनुमति नहीं देता है। जिस माँ–बाप से पुत्र पैदा होते हैं उसी माँ–बाप से पुत्री भी पैदा होती है तो इनको भी इसका मौलिक व नैतिक अधिकार है, अतः समाज इनको भी यह अधिकार व मान्यता दें। पुत्री द्वारा अन्तिम संस्कार मान्य होने पर पुत्र की कामना कम हो सकती है। लड़के और लड़कियां, बेटे और बेटियां, पुत्र तथा पुत्रियां तथा स्त्री एवं पुरुष में केवल लिंग भेद है कर्म भेद नहीं!

हम दो हमारा एक का नारा तब सफल हो सकता है जब पुत्री भी पुत्रवत व्यवहार में सफल होगी, इस प्रसारण में सरकार और समाज दोनों को ही आगे आना होगा। इस तरह की मानसिकता परिवर्तन कोई आसान बात नहीं है। फिर भी सतत् प्रयत्न और कोशिश से कुछ भी असंभव नहीं है।

अगर अध्यात्म के जरिए देखा जाए तो नारी ही प्रधान है जो कि सम्पूर्ण सृष्टि संजोयी हुई है। नारी से ही हमारा समाज और देश चलता है अगर नारी ही नहीं रहेगी तो पुरुष होंगे कहाँ से और कहाँ से होगा समाज। तो आइए आज से कन्या भ्रूण हत्या पर चारो तरफ से रोक लगायें। आज के जमाने में देखा जाए जो माता–पिता की सेवा में पुत्र पीछे रह गए हैं और पुत्रियाँ ही माता–पिता की बुढ़ापे में सेवा करती है। इस लिए आगे बढ़े और कन्या भ्रूण हत्या बन्द करें।

दहेज का भय, पुत्रवत कन्या का व्यवहार, स्वयं की सुरक्षा, सामाजिक मान्यता, आर्थिक सहयोग ऐसा प्रयास ही कन्या भ्रूण हत्या रोकने में सार्थक सिद्ध हो सकता है। जरूरत है जागरुकता की और स्वयं में पहल करने की।

हत्या भ्रूण कन्या की होगी, कन्या कहाँ से आयेगी।
बेटे रह जाए बिन व्याहे, बहुएँ कहाँ से आएँगी।
रोको इसको रोको इसको, कन्या कहाँ से आयेगी।
अफरा तफरी मच जायेगी, जब सृष्टि रूक जायेगी।

भ्रूण हत्या रोकने का सरल इलाज

- डॉ. श्यामसुन्दर भारती, रानीगंज

पिछले दिनों अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के मुखपत्र 'समाज विकास' मासिक में कई सज्जनों के कन्या भ्रूण हत्या पर लेख पढ़े। एक सज्जन ने अपने लेख का शीर्षक ही रख दिया। कन्या–भ्रूण हत्या के लिए कौन जिम्मेदार। मेरी समझ में इसके जिम्मेवार हम सभी हैं। किसी एक को जिम्मेवार ठहराना ठीक नहीं। कुछ लोग लिंग जाँचकर्ता डाक्टर को दोषी मानते हैं आप हम जानते हैं कि कन्या–भ्रूण–हत्या एक जघन्य दुष्कर्म है और भारत सरकार ने इसे दंडनीय अपराध घोषित किया है। पैसे की लालच देकर डाक्टर से अपने भ्रूण की लिंग जांच का अनुरोध करनेवाला भी समान रूप से दोषी है।

अब मैं हमारी प्राचीन विवाह व्यवस्था की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। यह व्यवस्था कितनी सुन्दर और लाभप्रद थी कि उस काल में सभी परिवार सुखी–स्वस्थ और समृद्ध हुआ करते थे। कन्या भ्रूण हत्या का सबसे बड़ा कारण है–धन का लोभ लालच। आजकल दहेज की प्रथा दानवी प्रथा बन गई है। कन्या वालों को अपनी कन्या के विवाह हेतु मुंहमांगी रकम देनी पड़ती है। इस डर से भ्रूण की लिंग जांच कराते हैं और कन्या भ्रूण होने की जानकारी मिलते ही उसकी हत्या डाक्टर से करा देते हैं।

कन्या–भ्रूण हत्या कराने की नौबत ही न आए और मनचाही संतान प्राप्त हो उसका सरल तरीका हिन्दुओं की विवाह पद्धति में वर्णित है।

हिन्दुओं की विवाह पद्धति में 'सप्तपदी' विवाह सर्वश्रेष्ठ माना गया है। भारत का सुप्रीम कोर्ट भी 'सप्तपदी' विवाह को सर्वोच्च पूर्ण विवाह मानता है। सप्तपदी में कन्या और और वर को अग्नि की साक्षी में कुछ वचन देने पड़ते हैं और अग्नि की परिक्रमा कर उसे स्वीकारना पड़ता है। उदाहरण के लिए 'सप्तपदी' का पहली मांग या पहला वचन कन्या वर से कहती है।

"तीर्थः व्रतो उद्यापन, दान यज्ञपान,
क्या सह स्वं यदि कान्त कुर्याद्।
वामांग आयामि दया त्वदीया,
भाषेत वाम्पं प्रथमं कुमारीः।।

अर्थात् तीर्थ–व्रत, उद्यापन, दान और यज्ञ ये पांच काम मेरे सानिध्य में मेरी सहमति और स्वीकृति से करने का वचन यदि आप देंगे तभी मैं आपके बाएं आकर रहूँगी।

बहुत से पंडित जी विवाह कराते हैं इसका अर्थ कन्या और वर को बता देते हैं और बहुत से नहीं बताते क्योंकि उन पर दबाव रहता है कि विवाह का सारा काम एक घंटे में निपटा दें। कन्या के वचन के उत्तर में वर को कहना पड़ता है तथास्तु अर्थात वैसा ही होगा।

एक बड़े रहस्य की बात इन वचनों में हैं वह है वामांग में आने की। वर के बायी तरफ कन्या को क्यों बैठाया जाता है। बहुत से पंडितों को भी इसकी सटीक जानकारी नहीं है। केवल हिन्दुओं में ही यह प्रथा है–मुसलमानों और ईसाइयों में ऐसी अनिवार्यता नहीं है।

बाएं दाएं का रहस्य हमारे स्वर विहपान में है–

बाएं स्वर को अर्थात् बांई नासिका छिद्र से जो श्वास हम लेते छोड़ते हैं बस चन्द्रस्वर कहते हैं और दाहिने नासाछिद्र से सांस लेने छोड़ने की सूर्यस्वर कहते हैं।

चन्द्रस्वर ठंडा होता है की सूर्य स्वर गर्म होता है, गर्भाधान के समय यदि वर का स्वर दाहिना चलता रहेगा तो उसकी वीर्य से नर शुक्राणु निकलेंगे और वे शुक्राणु भीतर घुस कर स्त्री के अंडे से मिल कर गर्भाशय में जाकर नस्मण के रूप में स्थापित होंगे। वंशवृद्धि के लिए ही हमारे प्राचीन ऋषियों ने यह तरकीब खोजी थी और यह शतप्रतिशत सफल ही है।

यदि कन्या भ्रूण चाहते हैं तो गर्भाधान के समय बायाँ स्वर चलने दें–स्वर बदलने का तरीका बड़ा आसान है–दाहिनी करवट २ मिनट लेट जाइए और आपका बाया स्वर चल पड़ेगा इस विधि से कोई भी मनचाही संतान प्राप्त कर सकता है।

सच पूछा जाय तो कन्या भ्रूण हत्या रोकने का सप्तपदी विवाह का यह प्रावधान कि विवाह इच्छुक कन्या का सदा वर के बांये तरफ ही बैठना सोना और रहना चाहिए–हिन्दुओं में १६ संस्कार होते हैं उनमें गर्भाधान संस्कार और पुरुष संस्कार का बड़ा महत्व है। बहुत से लोग न तो इसका अर्थ समझते हैं और न इसकी विधि जानते हैं। आज के युग में इन दोनों संस्कारों का बड़ा महत्व है और इसकी उपयोगिता है।

मैं सभी लोगों से विशेषत: मारवाड़ी महोदयों से निवेदन करता हूँ कि आप सप्तपदी विवाह की सार्थकता और उपयोगिता और पूर्णता को भलीभांति समझे और हर विवाह में वर और कन्या को पंडित द्वारा सप्तपदी विवाह के सभी कन्या के वचनों को वर वधु को पूरी तरह समझाएं और हमें जीवन में अपनाने को कहें। ऋषि शब्द का अर्थ है अंग्रेजी में Researcher हमारे प्राचीन ऋषि वास्तव में Researcher हुआ करते थे–उन्होंने

हजारों वर्ष हजारो वर्ष पहले जो अनुसंधान अन्वेषण और खोज की है वह अद्भुत है।

क्या आप विश्वास करें रामायण काल में वायुमान पेट्रोल से नहीं बल्कि मंत्रों से चलते थे। आप कहेंगे बकवास है। रावण के पास कई विमान थे और उसका हवाई अड्डा भी था—हाल ही रावण का हवाई अड्डा मिला है।

हमारे शास्त्रों में लिखा है—ऋषय: मन्त्र दृष्यर: अर्थात् ऋषि लोग मंत्र जाननेवाले थे—वे ही मंत्रों का अनुसंधान करते थे इस मंत्रों से मुश्किल काम सरल हो जाते थे।

मंत्रों के चमत्कार की चर्चा फिर कभी किसी अन्य लेख में होगी अभी मुख्य विषय पर आता हूँ।

आप हम जानते हैं कि भारत की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है—इसी कारण "हम दो हमारे दो" का नारा यहां लोकप्रिय हो रहा है। सभी चाहता है कि परिवार छोटा हो और संतान दो पर सीमित रहे—साथ में यह भी चाहते है कि पहली संतान पुत्र हो। ऐसा होना ठीक भी है पर सब के लिए ऐसा संसद नहीं है। यदि एक पुत्र और एक पुत्री हो तो कोई चिन्ता की बात नहीं होगी पर कइयों को पहली और दूसरी संतान केवल पुत्री के रूप में हो जाती है। ऐसे में घर में अशान्ति छा जाती है। यदि दम्पति ने परिवार निर्धारण के लिए आपरेशन नहीं करना हो तो वे तीसरी संतान पुत्र ही तो इसके लिए दर से भटकते है। मंदिरों – मस्जिदों में जाते हैं—किसी ताबीज वाले से ताबीज बंधवाते हैं और मनौतियाँ माँगते हैं। पर पुत्री होने के खास कारण की और धारन नहीं देते। अब मैं हिन्दुओं के सर्वश्रेष्ठ सवैधानिक और आचार संहिता के ग्रंथ मनुस्मृति की ओर ले चलता हूँ। मनुस्मृति की रचना अनुमानत: दस हजार वर्ष पहले हुई थी उसमें स्पष्ट लिखा है – पुरुवन संस्कार के बारे में।

युग्मासु पुत्र जायन्ते
स्त्रियोंऽयुग्मासु रात्रिषु।
तस्माद् युग्मासु पुत्राथी
संविशेद् आई वे स्त्रितम्।।

अर्थात् सम संख्या वाली रात्रि में सहवास करने से दम्पति को पुत्र पैदा होता है और इसलिए पुत्र की कामना करने वाले को अपनी पत्नी के ऋतुकाल में समसंख्या वाली रात को ही सहवास करे।

एक संख्या माने बराबर वाली संख्या अर्थात जो संख्या २ से विभाजित हो जाती हो जैसे ४–६–८–१०–१२–१४–१६ ऋतुकाल माने जिस काल में महिलाओं को मासिक स्राव होता है—साधारण: चार दिनों तक मासिक साथ होता है—जिस दिन शुरू होता है उसकी गणना पहली सत की होनी है इस प्रकार पांच दिनों के बाद ६वीं ८वीं १०वीं १२वीं १४वीं और १६वीं रात को समागम करने से पुत्र उत्पन्न होता है और ७वीं ९वीं ११वीं १३वीं १५वीं रात का सहवास पुत्री उत्पन्न करता है।

इस उपर्युक्त नियम के साथ यह भी याद रखना होगा कि समागम के समय पुरुष का दाहिना स्वर चलना आवश्यक है—क्योंकि ऐसा करने से नर शुक्राणु जो दाहिने अंडकोश में जमा रहते हैं—वे वहीं से ऊपर चले आते हैं—यह वैशानिक तय है—जैसे ही नर शुक्राणु ऊपर आकर गर्भाश्यि की ओर बढ़ते हैं और मार्ग में स्त्री के अंडाणु से संयुक्त होकर गर्भाशय में प्रविष्ट हो जाते है और पुत्र संतान के रूप में विकसित हो जाता है।

बहुत से लोग इस नियम को समय पर भूल जाते हैं उनके लिए भी आयुर्वेद में प्रावधान किया गया है।

यह एक प्रकार का मिश्रण बनाया जाता है जिसमें मोरपंख का चंदोबा शिवलिंगी के बीच, पुत्रजीवन लक्ष्मणा, पलाश के कोमल पते आदि से निर्मित होता है—फिर गुड़ में लपेट कर गोलियाँ बनती है। इन गोलियों को प्रात: दोपहर और संख्या काल में एक—एक गोली बछड़ेवाली गाय के दूध से सेवन कराया जाता है। सावधानी यही रखनी पड़ती है कि पेट में बच्चा २ महीना का होते ही इसे खिलाना पड़ता है क्योंकि २ महीने का गर्भस्थ शिशु के अंश प्रत्यंग २ महीना पूर्ण होते ही बनने लगते हैं। मान लीजिए कि भ्रूण कन्या के रूप में है तो इन गोलियों से वह कन्या भ्रूण नर भ्रूण बन जाता है और पुत्र के रूप में हो जाता है। किन्तु यह क्रिया ३ महीना का शिशु होने पर परिवर्तन नहीं हो सकता।

यह आयुर्वेदिक दवा भारत में पांच सन्त स्वावधान वैद्य बनाते हैं और लोगों को लाभ हो जाता है। किसी को कोई शंका हो तो मुझसे मोबाईल पर पूछताछ कर सकते हैं—नि:शुल्क परामर्श मिलेगा। आयुर्वेद को छोड़ और किसी पैथी में ऐसा इलाज नहीं है। भारत में बढ़ती हुई कन्या—भ्रूण हत्या को रोकने का यही सरल आशुफल प्रद तरीका और उपचार है।◆